

[illegible]



[illegible]

भिसुयवलिदानयादु॥ दामयुवा  
 य॥ यकयकनीशुया॥ ॥ दिनवलिह  
 मरुशुय॥ ततायजमानाहिषकया  
 य॥ यरुसिहासनाहवस्वस्विकारुने  
 यजमाननृमवुर्न॥ ॥ यजमानत्याय  
 नामयाहुदर्यानीनिधाय॥ शिवशक्ति  
 धालश्रीयजमानयाहवनेतथा॥ ॥  
 मूरुशिषाशमन्यकलशान॥ वसुविय॥  
 तुवहाश्यविशुभ॥ यन्दन॥ तुयदय  
 गा॥ सिन्दूर॥ तुलैजविष्ट॥ मारुनी॥ तु  
 रुंजनिवधु॥ सगान॥ तुदधितुकाका  
 यैवसुगकाश्रुद्यसस्वानविय॥ तुया  
 रुलिनी॥ ॥ थलुलावलाकनी॥ धा  
 लिवूननवुचक॥ श्रुणीर्वादा॥ कल  
 द्वायद्वयपूजावालि॥ श्रुग्निकलशश्रु  
 ग्निर्क॥ उर्द्वकलशहातायार्ग॥ श्रुषक  
 लशमायूयार्ग॥ जिकाशश्रुयागुयार्ग  
 ॥ स्वस्ति कजसियार्ग॥ वतीकलशहा  
 य॥ दयदाहनीवियमालकर्स॥ शिव  
 शक्तिकलसहाय॥ यजमानधालश्री  
 यजमानीहाय॥ सिधुमूढहाय॥



गान्ति ॥ कुंभजासि ॥ पुतिष्ठा ॥ कुंभमना  
 कृति ॥ कुंभपूर्व चतुनिरुति ॥ दय्य ॥  
 वलाकनै ॥ मधुलनमस्तु ॥ कुंभयात्रु  
 दवगणा ॥ सर्वपूजामादायया ॥ कां ॥  
 हकामपुसिधार्थं पूनवागमनाय च ॥  
 विवाचीय ॥ कुंभ सर्वमेलमंगल्यति  
 ॥ कोमावीदर्शन ॥ कूकलपूजा श्रुय ॥  
 साक्षीथांय ॥ कुंभावावसंगानकायाव  
 शितहाकिताठन ॥ धर्मनियनिसनया  
 वलायाय ॥ यद्रुताविवकन नयमन  
 व ॥ ॥ तिष्ठाविष्ममनकादष्टादि  
 वृतायायनविष्मपुतिष्ठास्तुपनसु  
 वर्णकवडाधजावलाहन ग्राहावाण  
 यद्रुविधिः समाकशा ॥  
 पूर्वकवडुर्थदिवसावडुथाकर्मकुर्या  
 न् ॥ विधिर्थाहमयाय ॥ वलुयागादिम  
 लेवासीतया ॥ मूलादतडावनलिव  
 य ॥ पूर्वयात्रुवादकूद्रयायशाविधि  
 मलेवासीतया ॥ दक्षिकूद्रवृतायाय  
 नरुवसाधर्मदन ॥ दवपुतिष्ठाश्रुन  
 सावर्षवर्द्धनवृसाधनयायमास ॥

गान्ति कुंभ  
 कृति कुंभ  
 वलाकनै मधुलन  
 दवगणा सर्वपूजा  
 हकामपुसिधार्थं  
 विवाचीय कुंभ  
 कोमावीदर्शन कूकल  
 साक्षीथांय कुंभावाव  
 शितहाकिताठन धर्म  
 वलायाय यद्रुताविव  
 व तिष्ठाविष्ममनकाद  
 वृतायायनविष्मपुतिष्ठा  
 वर्णकवडाधजावलाहन  
 यद्रुविधिः समाकशा  
 पूर्वकवडुर्थदिवसावडु  
 न् विधिर्थाहमयाय वलु  
 लेवासीतया मूलादतडा  
 य पूर्वयात्रुवादकूद्रया  
 मलेवासीतया दक्षिकूद्र  
 नरुवसाधर्मदन दवपुति  
 सावर्षवर्द्धनवृसाधनया  
 यमास



स्नानार्थं यत्र फलदा



का ॥ ॐ ग ॥ तां ॥ १ ॥ द ॥  
 पि ॥ ॐ स ॥ क ॥ र ॥ ज ॥  
 ना ॥ ध ॥ ॐ न ॥ म ॥ ह ॥ उ ॥  
 न ॥ ॐ श ॥ व ॥ व ॥ क ॥ ल ॥  
 व ॥ ह ॥ स ॥ ति ॥ थ ॥ रा ॥ ॐ न ॥  
 व ॥ क ॥ वा ॥ सा ॥ ॐ य ॥ त ॥ वा ॥  
 ना ॥ ता ॥ ग ॥ ॐ या ॥ त ॥ व ॥ द ॥  
 पा ॥ ॐ ग्री ॥ व ॥ ग ॥ ला ॥  
 न ॥ मा ॥ व ॥ द ॥ र ॥ मा ॥ श ॥  
 वि ॥ ॐ पि ॥ थू ॥ क ॥ र ॥ क ॥  
 स ॥ र ॥ ॐ

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ अथ विष्णोः प्रसादः ॥  
 स्त्रियनसूक्तं कलषघ्नं  
 वाह्यं च कादश्यादिवृत्ताद्य  
 नमोदावाच यद्गुणविधिर्लिख्यते  
 ॥ ॥ आङ्गुष्ठीं पृष्ठीं हस्तयोः पृ  
 ञ्चाङ्गुय ॥ ॥ दिवसानूकमे  
 नयवाचकसान्निध्यं श्रुतिना  
 सनकद्रुता ॥ विष्णुदवयानम  
 पूजयामानवा ॥ ॥ चकर्विंश  
 तिर्यङ्गुष्विवारुदशरिदिने ॥  
 त्रिवाचसूयनयनः शिवाः सद्य  
 नुकावयत् ॥ ॥ मण्डपसका  
 वाय ॥ ॥ मण्डपः गायक ॥  
 कृ १४ ॥ यद्गुणविधिर्लिख्यते  
 निःकृष्टादस्त्रियनयावा  
 दानकं नाथः दत्तकद्रुवाक  
 लादिमात्रकसूत्रकर्मज्ञा  
 नद्युविवत् ॥ अथ ब्रह्ममण्डला  
 द्वावनक्यान् यथाकविधा







नमः सन्तु ॥ धावमस्य क ॥

पूजनं दत्तं वामम (ध्रुव ॥ १० ॥

पयनयनम ॥ १० ॥ सवस्वये न

म ॥ १० ॥ मलालं नमः ॥ १० ॥

पस्यन्तु यरुता यरुता रुविसं

किता ॥ यरुता विद्य कलत्रं सुन

स्यन्तु यरुता ॥ ॥ सवयवा

जिका मूर्ध्नि वधानवसिं हामु

मकुनयस्यामधुपविकि वरु ॥

विद्यानूसावयन ॥ ॥ ॥ ॥

वारुभो विरु ॥ वामे पाल्मिद्यान

नमधुपंगकुय ॥ ॥

नमा विद्यरु वपावल्या चर्प ॥ वलि

यातजगता वरु क दन्द १० ॥ वय

के ॥ विधिर्थायाय ॥ ॥

|      |     |     |         |
|------|-----|-----|---------|
| कुसा | दधि | गाम | अथयं वग |
| दक   |     | यलि | वसाधनं  |

|    |      |     |          |
|----|------|-----|----------|
| यल | प्रस | गाम | ॥ वयपा ॥ |
|    | पाद  | कु  | दधिनि व  |

|     |     |       |           |
|-----|-----|-------|-----------|
| गाम | दूद | स्नान | व (गाम १० |
| य   |     |       |           |

पूजादुर्वच (गाम १० ॥ १० ॥

कैवेत पूर्वदिक् मता यथा ॥

प्रमानमाह ॥ (गाम १० ॥ वमक

अयुष्टाद्वेनु (गाम १० ॥ कीर्तं सफय

लक्ष्यं दधिदिय वमयन ॥ अथ

भकपलं येव यं वगधं पुकारितं

॥ ॥ पूजनमाह ॥ डमायति १० ॥

वावक्रि १० ॥ सामं वजनार्दनं १० ॥

सुवत वरु १० ॥ सधु वरु १० ॥

कुर्क ॥ ॥ अथयं वगधं पूजनं ॥

अवम्य ॥ १० ॥ अयादि ॥ वाक् ॥

सूर्याय ॥ न्यास १० ॥ अथयं वगधं पूजा

॥ ॥ आत्मपूजा ॥ १० ॥ अथि

तानक्षे विरूपाक्षालरुततिदीर्घ

वादिदुर्लभं वातिसूक्तं वातिकृष्टं

वातिगुर्कं वातिकृष्टं कुलं वाति

लामसं व १० ॥ अथयं वगधं पूजा

पूजाय १० ॥ मागध १० ॥ पूष्यली कु

नव १० ॥ वासुडा १० ॥ अथयं वगधं पूजा

जायया ॥ वलि ॥ रुतस्वामि ॥ अ

वाति १०



ॐ नमः ॥ ॐ दवस्यता ॥ ॥  
 ॐ नमः ॥ १ ॥ ॥ गामय  
 ताद्रदवतायनम ॥ ॐ ववाहाय  
 विषधियनयनम ॥ ॥ ॐ अग्नि  
 ॐ द्रा ॥ वायवा ॥ ॥ गामय ॥ २ ॥ ॥ ग  
 मयायजनादनाय २ ॥ ॐ क पि  
 लायपथिमवकायवृद्धाधियन  
 य २ ॥ ॐ गन्धद्रावा ॥ ॥ पथिम  
 ॥ दूद ॥ यमससामदवताय २ ॥  
 ॐ नवसिंहायडरुववकायवृ  
 धवाधियनय २ ॥ ॐ न्यायायस  
 समरुतविस्वतसामवृष्ट्यांरुवा  
 वाजस्यसङ्ग ॥ ॥ पूर्व ॥ द  
 धि ॥ ४ ॥ ॐ दध्रुमायनय २ ॥  
 ॐ वेकल्लायपूर्ववकायवृद्धाधि  
 यनय २ ॥ ॐ दधिकाय ॥ डरुव  
 ॥ घृत ॥ ५ ॥ घृतायरासकवाय २  
 ॥ ॐ नञासि ॥ ॐ गान ॥ कृष्णद  
 क ॥ ६ ॥ कृष्णदकायववृद्धादव  
 ताय २ ॥ ॐ ववृद्धास्यारुनम

सिववृद्धास्यारुनम ॥ ॐ नमः ॥  
 वृद्धास्यारुनमदन्यसिववृद्धा  
 अरुनमदनमसिववृद्धास्यारुन  
 दनमासीद ॥ ॥ नैमत्य ॥ पूष  
 ॥ ॐ पूषादकायधीदवृ २ ॥ ॐ  
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ गामयलिंगायगिवाय २ ॥ ॐ  
 गिवानामा ॥ ॥ मध्य ॥ वृद्धा  
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ वृद्धायायवृद्धा ॥ २  
 ॥ ॐ सैकष्यायडुद्धवकायसदा  
 गिवाय २ ॥ ॐ वृद्धायज्ञान ॥ ॥  
 पुनः पूजन ॥ यादुकमनधव  
 २ वेदनमूनदथासत ॥ पति  
 नवान् ॥ ॐ सन्ध्यामिसमाय ३  
 डावधीति ४ समावधयावसन  
 सध्रुववतीर्जगतीरु ४ पूषाका  
 ५ सैमधूमतीर्मधूमतीरु ४ पू  
 षाकाम ॥ ॥ ॐ जनयल्लेखास  
 योमीदमग्निविदमग्नीषोमया  
 विषत्वाद्यम्नासिविष्वायवृ







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यं वगवासानथायं यस्मै यथा दा  
यं यथा दासाधनं ॥ ॥ आपः  
कीचकृष्णानि सिद्धार्थं तिलक  
पुल ॥ कालजवसमायुक्तं सका  
मं देवामुच्यते ॥ एतन्मांसाद्युया  
नुनिधाय ॥ विष्णुः शन्यासः ॥ अर्घ्य  
यागपूजा ॥ यथैतन्न ॥ आवाहना  
दिधनमुद्रादींस्तु मुद्रादर्थयेत्  
॥ ननु यथागुणलेन आत्मानं स  
र्वोपकर्मणि विवर्तयत् ॥ गायत्र्या  
यथादत्तस्य ॥ वेद ॥ ॐ आपागृह्णा  
न्मातृवश्च धनं धनं ननु यत्  
यश्च ननु विध्यते हि विद्युपवदं  
किं देवी वृद्धीदास्यश्च विवायूत  
प्रमि ॥ ॥ विष्णुस्तु पूजयित्वा आ  
त्मानं विष्णुमयं तावयति ॥ विष्णु  
यामूलमनुकुरुकोन ॥ ॐ स्वर्गं वा  
गुसाधनविधिः ॥ ॥

ननु ज्ञानखड्गसाधनं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
कवेतामे सुतकृत्यात्यविय ॥ ॥  
द्विंशदहं जावली ज्ञानखड्ग ॥  
हायत ॥ कृष्णाय ३४ ॥ ज्ञानखड्ग  
वनीकृत्वा वामरुक्तनधत्वा ॥ पू  
जने ॥ ॐ स्वर्गं देवगदायनम  
मृधावाहनेन जयवयधायन ॥  
वेद ॥ ॐ महो १२ ॥ ॐ न्यावेदुदु  
४५ ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ हनुयाः  
यानं यथास्मान्दक्षिणं ववर्तयं य  
था ॥ ॥  
वामरुक्तनज्ञानखड्गजादावमणु  
परमि ॥ ॥ धनं ॥ रुतसागृह्णादहा  
संस्कारं ॥ ननु मणुपरमि ॥ ॥ धनं  
॥ गायत्रीमन्त्रनमणुपनिवीरुणी ॥  
ॐ सकलैकिकवधमकवकभका  
मृध्ववदति सकमाना ॥ ॥ रुतारि  
वकुमनर्वैयलनविष्वागुवना  
निरुक्त ॥ ॥ पृथीकपनं ॥ मणु  
पद ॥ १२ संस्कार ४ ॥ अमुपायाक



॥ पूजननिर्वाहः ॥ २ ॥ अमुं  
 ॥ ३ ॥ कवयनावयुः ॥ ४ ॥  
 कवयनावयुः पूज्यः श्रीगान्धिनारायणं  
 शिवशक्तिनरलोकं ॥ ५ ॥ रुद्रसि  
 रुद्रसिद्धिदिग्गजविश्वधारा वि  
 श्वस्यरुद्रनयधर्मा पृथिवी ऊर्ध्वपृ  
 थिवी ॥ ६ ॥ पृथिवीनामादि ० सा  
 ॥ ॥ यासाद्युक्तिः ॥ ७ ॥ पुत्रासुख  
 मित्रवृत्तस्यपाशा ननत्वावधः स  
 विनाससवाशः प्रकृत्यजानोसकृत्  
 स्यलाकविश्वीर्षी सद्युत्पादधाः  
 मि ॥ ॥ मधुपालरुर्न ॥ ८ ॥ वायवा  
 यादिवीर्ययुताभिरुद्रादाकृत्य ॥  
 पिवास्तुनयधर्मा अरुप्रियम् ॥ ९ ॥  
 वीरिद्रुपन ॥ १० ॥ वीरुयधर्मा ॥ ला  
 जाविरुपन ॥ ११ ॥ उर्वरविष्ट ॥ ॥  
 पंचगव्यानामूकः ॥ १२ ॥ पवित्र ॥  
 सूर्यपातुजलन ॥ १३ ॥ समिष्टियान ॥  
 पंचसूत्रनवधर्मा ॥ कृष्णस्थिता न सध  
 नद्याय ॥ वलसि ॥ वलागनसि ॥ य

लाकसि, आपरुद्रावलासि ॥ १४ ॥  
 ले ॥ १५ ॥ निस सद्युत्पादना ॥ ला  
 कायालादिन ॥ १६ ॥ ललाहर्न ॥  
 पल्लवमाला ॥ १७ ॥ अस्वस्त्ययन ॥  
 पुष्पमाला ॥ १८ ॥ धीश्वर ॥ १९ ॥ निस स  
 य ॥ धर्मा ॥  
 ननाशिवशक्तिवरासभनयुजर्न  
 ॥ न्यासः ॥ अर्घ्यपातु पूजा ॥ २० ॥ ग  
 नश्रुत्तपूजा ॥ २१ ॥ धाकिजव शि  
 वस्वव आधावधकल्यादि ॥ २२ ॥ ग  
 वृत्तस्त्राय २ ॥ वृत्तस्त्राय २ ॥ कृष्ण  
 स्त्राय २ ॥ सिंहास्त्राय २ ॥ २३ ॥ नत्वा  
 यामि ॥ अस्त्र ॥ २४ ॥ दवस्यत्वा ॥ अस्त्र  
 रुर्न ॥ २५ ॥ विश्ववराह ॥ शिवकलश  
 ॥ २६ ॥ धीश्वर ॥ धाकि कलस ॥  
 उर्वरयज्ञान ॥ २७ ॥ महा अर्घ्यसव  
 स्वनीपुत्रनयनिकरुनाधिया  
 विश्वाविवायकि ॥ २८ ॥ नमः  
 रुवाय ॥ २९ ॥ शाला ॥ आवाहनादि  
 ॥ विसर्जनं अमुन ॥ ३० ॥



उमाननगिवहाकि कललनना  
आनकैलवाकव मधुपदूना  
रुमनयाय ॥ ॥ आचार्यनम  
दयाशुदकनराय ॥ ॥ अथगच्छु  
॥ ॥ रुद्रालाकपालासनधारुवध  
वकार्यरुमतकुरु धावयारुमत  
सत्रीआचार्यवाचयत्याथ सर्ववि  
प्रतिवाचननाथा मरुद्वयीयू  
कैर्ययकर्मसमावरुत ॥ ॥ यासाद  
क्रियतलकां यावकर्मकृतसति  
॥ ॥ यरुसलदकांथय विद्यानाधि  
सनायव ॥ ॥ ययं सवाहनाफाय  
सनिधीषणिवाहूया ॥ ॥ रुं वक्राह  
नं ॥ ॥ रुं स्वस्तिवाचनप ॥ ॥ ॥  
पूनश्चिवास्त्रपूजा ॥ ॥ गिवदेक ॥ ॥  
किवाभ ॥ ॥ नरिलंखसाय ॥ ॥ रुं वृम  
भर्ग ॥ ॥ यं ववत्तन ॥ ॥ रुं दिवधग  
रु ॥ ॥ ॥ पूनश्च पूर्ववत् न्यासादि  
आत्मपूजार्क ॥ ॥ आधावधकयथा  
दि ॥ ॥ रुं कत्वायामी ॥ ॥ आत्मी ॥ ॥ रुं दव

स्यत्वा ॥ ॥ रुं वक्रा ॥ ॥ १ ॥ ॥ रुं विष्णुव  
॥ ॥ रुं वृदाय ॥ ॥ रुं सवस्वये ॥ ॥ रुं वा  
वृत्ते ॥ ॥ रुं रुद्रिहवात्मन ॥ ॥ रुं या  
जलि ॥ ॥ रुं गन ॥ ॥ ॥ वदन ॥  
॥ रुं वक्रजज्ञान ॥ ॥ रुं विष्णुववात ॥ ॥ रुं  
नमश्चाम्भवाय ॥ ॥ रुं मरुद्वयीयू ॥ ॥ रुं  
वस्वतीयवतयतिकुरुना ॥ ॥ विथा  
विष्ठाविवाजति ॥ ॥ ॥ रुं श्रीयुग  
लक्ष्मी ॥ ॥ रुं श्यामाल ॥ ॥ रुं धूवसि ॥ ॥ धूप  
॥ ॥ रुं नञासि ॥ ॥ दीप ॥ ॥ रुं यारुलिनी ॥  
रुल ॥ ॥ रुं मन्त्रयन ॥ ॥ रुं मनाशति ॥ ॥ पु  
तिष्ठा ॥ ॥ जाय ॥ ॥ मुनि ॥ ॥ वत्नोषधीसक  
लकीर्थजलनयूर्ण स्वच्छयपल्लवः  
सूतारितपूष्यमाला ॥ ॥ यरुवृयाग  
विषयमनिरु ॥ ॥ यसुसाम् त्वांकुम्  
मूर्तिगिवहाकियुर्ननमामि ॥ ॥ निमि  
हिमूर्त्तय ॥ ॥ ॥ रुं गन्धादि ॥ ॥ ॥ रुं तिहि  
वान्न ॥ ॥  
तथापूर्ववाचसमीयं गत्वा ॥ ॥ न्यासादि  
॥ ॥ गायत्रीमर्कलानित्रीकटी ॥ ॥ रुं कत्वा  
यामी ॥ ॥ आसन ॥ ॥ रुं दव स्यत्वा ॥ ॥ ॥ रुं







गुमानिर्वादिष्टम्युजामानिर्वादि  
हमनुवमथविष्मन्मृथिवा॥ ॥  
गुगलानीत्वा॥ गुंयावकान॥ गुंशीष्य  
न॥ गुंयंकामकाम॥ ॥ गुंदकिण॥  
दावक्किरधजाय२॥ गुंमूस्माकमि॥  
वलि॥ गुंमूधवा॥ गुंवाहनादि॥ धूय  
॥ दीय॥ जाय॥ मुनि॥ गुंमहावीथीम  
हाकाय॥ रिनीजनसमयूरु॥ ननुदा  
वक्किरं॥ होलं॥ केलासस्तु॥ रुनं  
॥ गुंमृगंधादि॥ दाववककारुव॥

ननायस्थिमदावावर्त्तनी॥ न्यासादि॥  
गायत्रीनिवीरुणी॥ गुंमूस्मा॥ गुंमूस्मा  
यामी॥ गुंदवस्यत्वा॥ गुंकल्यादा  
वाय२॥ गुंपथाय२॥ गुंधातु२॥  
गुंविधातु२॥ गुंगलयनय२॥ गुं  
सवस्वत्ये२॥ गुंमहालक्ष्मी२॥ गुं  
पस्थिमदावाविदेवर्तमूनिबूदाय  
२॥ ॥ वेद॥ गुंदावायवी॥ गुंयन  
पथा॥ गुंविष्मन्मृकवीथीपिण्यवाव  
य४पास्थिवानिचिममवजापुसि॥

या३मूस्करायदुरुव०सधस्तुवि  
वकुमापामु॥ धावगायाविष्मवत्वा  
॥ गुंदिवावाविष्म२०नवापृथिव्या  
महावाविष्म२०वावर्त्तनविकारु॥ ०  
रुहिरुस्तुवसुनापृणस्वाय्ययवुद  
किणायानसद्यादिष्मवत्वा॥ गुंमृ  
लानीत्वा॥ गुंयावकान॥ गुंशीष्यता  
गुंयागयाग॥ ॥ गुंपस्थिमदाव  
क्किरधजायनम॥ वेद॥ गुंमूस्मा  
॥ ॥ वलि॥ गुंयरुतानामधियन  
याविशिखास४कयर्दिन॥ नवापु  
सदप्रथाजनवधन्यानिनमसि॥  
गुंवाहनादि॥ धूय॥ दीय॥ जाय॥  
मुनि॥ गुंमहावीथीमहाकायसुव  
र्त्तुसदृशयुनि॥ ननुदावक्किरं॥ हो  
लं॥ गन्धसादन॥ रुनं॥ गुंमृगं  
धादि॥ पस्थिमदाववककारुव॥

ननाडुरुवदावावर्त्तनी॥ न्यासादि॥  
गायत्रीनिवीरुणी॥ गुंमूस्मायामि॥



॥ ॐ द व स त्वा ॥ ॐ स रु द्वा वा  
 ॥ ॐ यं था य २ ॥ ॐ अ या य २ ॥  
 ॐ वि न या य २ ॥ ॐ ग ण य न य २ ॥  
 ॐ स व ये २ ॥ ॐ म ह ल न्ते २ ॥  
 ॐ उ रु ना धि दे व न ना वा य ना य २  
 ॥ ॥ वे द ॥ ॐ द्वा बा द वी ॥ ॐ य न य  
 ॥ स वि न ४ पू या सा दि व दि व सो रु  
 ॥ ग मा स व नि ॥ ॐ न्द्रा या वा पृ थि वी सि  
 ॥ ध र्म दि वा दि हो ॥ ॐ न्द्रा दि नि षा र्म य  
 ॥ स रु ॥ ॐ पु न द्वि ष्ट रु व त वी र्थ ण म  
 ॥ गान रु म ४ कृ व वा गि वि द्वा ४ ॥ य स्था  
 ॥ वृ ष णि ष्ट वि द्वा म ॥ ॐ धि क्रि य नि  
 ॥ रु व ना नि वि द्वा ॥ ॐ वि श्वा व वा ट ॥  
 ॐ ग ण ना त्वा ॥ ॐ या व का ॥ ॐ धी  
 ॥ य न ॥ ॐ वि श्वा ४ क र्मा ॥ ॥ ॐ उ रु  
 ॥ व द्वा व स्ति न ध्व जा य २ ॥ ॐ न्द्रा सा क  
 ॥ मि ॥ ॥ व लि ॥ ॐ नी ल ग्री वा ४ लि  
 ॥ नि क ष्ट दि व ० वृ द्वा ३ उ य णि ना ४ ॥  
 ॥ न वा ५ स रु स या अ न व ध न्वा नि  
 ॥ न न्मा सि ॥ ॥ न्द्रा वा रु ना दि ॥ धू य

॥ दी य ॥ जा य ॥ सु नि ॥ म ह वा  
 म ह का य स रु टि क स नि  
 म ह द्वा व स्ति न ॥ ॐ नी ल हि न व न क म  
 ॥ ॐ नि ॥ ॐ न्द्रा ग धा दि ॥ ॐ व द्वा  
 ॥ व व रु का रु व ॥  
 ॥ न न ४ कृ ष्टु स मी यं ग त्वा ॥ ॥ कृ ष्टु  
 ॥ रु मि ॥ ॐ ध न ॥ ॐ पृ ष्ठा मि त्वा प व म  
 ॥ न पृ थि वा पृ ष्ठा मि त्वा रु व न स न  
 ॥ हि ॥ पृ ष्ठा मि त्वा पृ ष्ठा न्द्रा स स व न  
 ॥ पृ ष्ठा मि वा व य मं वा म ॥ ॐ ग रु  
 ॥ पू ज न ॥ ॐ मा न व य र्ण पृ थि वी पृ  
 ॥ वी रु स नि ॥ ॐ य ना म रु न्द्रा ॥  
 ॥ ना मि ॥ ॐ वं म रु कि ४ स मि दाने  
 ॥ पु जा य ति वि द्वा क र्मा वि मं व रु ॥  
 ॥ कृ ष्टु स र व ला पू ज न ॥ ॐ का न्द्रा स  
 ॥ व द रु व न स न रु का या वा पृ थि  
 ॥ वी न्द्रा न्द्रा ४ क ४ सूर्य स व द वृ  
 ॥ रु ना ज नि न का व द व न्द्रा म र्म य  
 ॥ ना जा ॥ ॥ कृ ष्टु स रु रु ॥ ॐ य  
 ॥ वि रु द्वा ४ ॥ ॥ कृ ष्टु स वा या न्द्रा नि



[illegible][illegible]



॥ ॐ ह्रीं कृष्ण विष्णु मि ॥ लाजा  
 विष्णु यन ॥ ॥ गायत्री मन्त्रः  
 ॥ कृष्ण निवीरुन ॥ ॥ ॐ यद  
 वादति कृष्णन संमार्जन ॥ ॥  
 ॐ मानसकति ॥ लेपन ॥ गाय  
 न ॥ ॥ ॐ ह्रीं वरुनि ॥ मरुत्तु  
 ॥ ॥ ॐ तत्त्वायामीति ॥ आसन ॥  
 ॥ ॥ कृष्ण ॥ ॐ गायत्री ॥ ॥  
 ॥ ॥ पश्चिमनदकि ॥ ॥ दकि ॥  
 नदरु ॥ ॥ ॐ रुवनम ॥ ॥ य  
 न ॥ ॥ गायत्री ॥ पश्चिमालखा  
 दकि ॥ ॥ पश्चिमदवता ॥ ॐ रुवन  
 सा मयदाना ॥ प्राजापत्यनु म  
 धमा ॥ ॥ मरुत्तु वधामी गरुत्तु  
 य भवदूतासन ॥ ॥ लेखा वरु  
 रुय विद्या ॥ गायत्री विन्यसिद  
 ॥ ॥ ॐ सदसस्यतीति ॥ ॥  
 धान्यक यन ॥ ॥ ॐ वीरु य  
 ॥ ॥ ॐ वीरु यन ॥ ॥  
 ॐ देवस्यत्वति ॥ कृष्ण सनी ॥ ॥

ॐ ह्रीं कृष्ण गुरुति ॥ विष्णु नान ॥  
 युता ॥ ॥ सविदुर्ध्व ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण  
 तासु मतिं विष्णु जन्म ॥ ॥ यामस्य कृष्ण  
 मरुत्तु यपीना ॥ ॥ सधधा वाचय साम  
 हीगाम् ॥ ॥ ह्रीं कृष्ण कव ॥ ॥ सधधि निधा  
 य ॥ ॥ ॐ यदाननमि ॥ ॥ यदं लिख  
 ता ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण गुरुति ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण  
 निधा ॥ ॥ ॐ तत्तासि ॥ ॥ यतासन ॥ ॥  
 ॐ दकारुनी ॥ ॥ यवसूत ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण  
 विष्णु ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण नवसूत ॥ ॥  
 लक्ष्मीमावाहयत ॥ ॥ यदमूदया ॐ ना  
 वायली मरुत्तु नान यवाये ॥ ॥ मरुत्तु  
 मती न्यायत ॥ ॥ मरुत्तु ना वायली रखा  
 ता ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण गुरुति ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण  
 सर्वदूपाका ॥ ॥ सर्वदूपाकि समन्विता ॥ ॥ कृ  
 न्दम ॥ ॥ सधधा नाका ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण  
 कृया ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्ण वरु ॥ ॥  
 यजमानस्य रुक्म नवदुष्टकाष्ट ॥ ॥ गृ  
 हाखा मरुत्तु वायली यमस्य यत ॥ ॥ ॐ  
 ह्रीं वरुनि ॥ ॥ काष्ठ मरुत्तु न ॥ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यद्गुणव्याजं न  
 मितं न ॥ यक ५ त्रिकान ३ वन्द  
 नादियद्वापवीति ॥ पूजा ॥ ॐ रु  
 द्राकाय २ ॥ ॐ रुद्रवल्गाकाय २ ॥ ॐ  
 स्वःलाकाय २ ॥ ॐ मरुःलाकाय २ ॥  
 ॐ जनःलाकाय २ ॥ ॐ तथालाका  
 य २ ॥ ॐ सखलाकाय २ ॥ वेद ॥ ॐ  
 अतवष्ट ॥ यजमानं तन्मग्निमानि  
 य ॥ ॥ सूर्यकान्तादिहि ॥ ॥  
 दिविदियकविधि ॥ आदू मृगु न  
 प्र १ लू लति २ यश्च वलधनं तो य  
 काया रु स्या रु विर्यं सिमता स ग  
 रुयाद नय ॥ कायादन हि न ॥ द  
 वन आदू यिता वयू ५ सिजलः  
 पा रु सधलन व वावदय कं कं स  
 पा रु सनय ॥ मयाय ॥ मूलमकु  
 न ॥ ॥ पुन ॥ ॐ वागीवूवक्रियेन  
 न्यायनम ॥ ॥ वेद ॥ ॐ अग्निर्वा  
 ति ॥ अग्निर्वग्निः ॥ स्वाहा ॥ सूर्याश्वा  
 ति ॥ अग्निः ॥ सूर्यः ॥ स्वाहा ॥ अग्निर्वग्निः

अग्निर्वग्निः ॥ स्वाहा ॥ सूर्याश्वा  
 ति ॥ अग्निः ॥ सूर्यः ॥ स्वाहा ॥  
 अग्निः ॥ स्वाहा ॥ ॥ ॐ अग्निर्मग्निः ॥  
 पूर्वो दिनवाय ॥ कवादाग्निमा क  
 र्षी कृत्वा नयानु निधाय ॥ निर्म क  
 न ॥ सर्वयवाजिका र्णा ॥ ॐ लका  
 न ॥ ॥ ॐ अग्निर्वग्निः ॥ वलियदानं  
 ॥ ॐ कजासि ॥ ॥ ॐ कवादाग्निः ॥  
 कवादावा विंकाया वग्निः स  
 नय ॥ ॥ जवाकृत्तिलनादूति ३  
 ॥ ॐ कवादाग्निः स्वाहा ३ ॥ पुन ॥  
 वलिमग्निदीपं दत्वा कवादाग्नि  
 वहिः ॥ द्वावांग ॥ ॐ ॐ रु  
 वाय ॥ ॐ यस्यार्धनी ॥ ॥ अर्धया  
 गादकना सूर्यः ॥ वन्दनादि य  
 र्थं व ॥ वरुसं स्का वमूलन निवीक  
 ॥ मृगुदासं वरु ॥ कवचना वगु  
 न ॥ गायत्रा जया ॥ धनमूदानुद  
 र्थं ॥ ॥ गताग्निर्न्यासः ॥ ॐ न  
 मृगुदाय रु ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय







[illegible]

गुरुति ॥ वृक्षासनं ॥ ॐ ह्रीं दक्षिण विर  
 ति ॥ यनीतासनं ॥ ॐ यत्पुस्तकं वरु ॥  
 यनीतयनय्यं ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ अ  
 स्तुतं यनीत ॥ ॐ आधादिउति ॥  
 उदकपूजितं ॥ वीहि ॥ दग्ध ॥ वन्द  
 नादियुक्तं ॥  
 वृक्षापूजा ॥ वृक्षं न्यास ॥ ॐ हं सा स  
 नाय ॥ ॐ यद्वा सनाय ॥ ॥ ध्यान  
 ॥ ॐ यद्वा सनस्ति नंदवं हं सखं व  
 रुचाननं ॥ यीनपीनं वरुचार्द्रं कृष्ण  
 दण्डं कृष्णं ॥ ध्यानपूष्यं ॥ ॐ  
 वृक्षं ॥ ॐ यजायतय ॥ ॐ वद  
 धियतय ॥ ॐ सर्वस्यादवस्था ॥  
 ॐ वृक्षयज्ञानं ॥ वद ॥  
 यनीतपूजा ॥ विष्णु ॥ न्यास ॥ ॐ यद्वा  
 सनाय ॥ ॐ गुरुताय ॥ ध्यान ॥  
 ॐ यद्वा हं नार्कमारुतं नार्कसं सर्वं  
 तानिरु ॥ ॐ स्ववकुगदायदा विष्णु  
 कृष्णस्य वारु ॥ ध्यानपूष्यं नमः ॥  
 ॐ विष्णु व ॥ ॐ यनीताय ॥ ॐ गुरु



[illegible]

कलशा चर्चनं ॥ ॐ नत्वा यामी ॥ श्री ह्रीं ॥  
 ॐ देवस्यत्वा ॥ श्री सुदृढी ॥ ॥ ॐ ॥  
 किंतालनाय ॥ ॐ कनिसावृक्षा य  
 ॥ ॐ रूक्षोकाय ॥ ॐ यद्यन्त्र सा  
 खाय ॥ ॐ रुडा य ॥ ॐ सुरुडा य  
 ॥ ॐ वियन्त्रकाय ॥ ॐ ॐ ॥  
 धाका बायेवका धिदेवका येनम ॥  
 ॐ कृन्तयगाय ॥ ॐ मन्त्रदाय ॥  
 ॐ सोमाय ॥ ॐ श्रीगात्राय ॥ ॐ श्री  
 स्वस्वाम्ने ॥ ॐ वनव ॥ ॐ कक्षावा  
 य ॥ ॐ नात्राय ॥ ॐ यष्यमा  
 लाये ॥ ॥ वद ॥ ॐ वत्ताष्टीगा ॥  
 ॐ कनिका ॥ ॥ ॐ नापुंसविदुर्वच  
 ॥ ॐ स्पष्टिगामाहं वृत्तासुमर्तिविश्व  
 ऊर्न्य ॥ यामस्य क ॥ ॐ श्रीदूरुपयीना  
 ॥ ॐ सदुसुधात्राय य सामहीगाम् ॥ ॥  
 ॐ उद्विव ॥ ॐ रुद्रात्राक्तविक्रम्युदा  
 द ॥ ॐ रुद्रयथिवा न्यूनानस्त्रामात्र  
 तामिना रुमिन्नावत्र ॥ ॐ रुद्रवलाध  
 र्मदा ॥ ॐ रुद्रवनित्रा रुद्रवनित्रा



यस्यापवनिपर्युहामि॥वक्रद०  
हृक्कृन्०हृयद०हृयुजानृ०  
ह॥ॐयूजतमनडतयूकधियाः  
वियुवियुसवृहताधियधित॥  
विहाकुदधवयूनाविदक॥ॐ  
नहोदवस्यसविशुषयनिष्कृति॥  
साहा॥॥ॐॐदविष्कृ॥॥ॐवृ  
हस्यतद्वुदिवसियापानावामन  
धहि॥नजसजससावामनधः  
हि॥॥ॐवक्रयज्ञान॥॥ॐश्र  
कवाजायकिरतंकृतायादिनवद  
ॐमेमायेकलिननंदायवायाधिक  
लिनमाकन्यायसहाकृ॥मृष्य  
वगावचुमनकायगायानंकृध  
यागोविकृतनंकृमानडयतिष्ठ  
तिदृक्कृतायववकाचार्ययापान  
सेलगाम्॥॥ॐश्रग्निमीठ॥ॐॐ  
मन्त्रवा॥ॐश्रग्निर्मूर्द्धा॥ॐश्रवस्त्र  
व॥ॐमहोयो॥ॐविष्णुववाट॥ॐ  
ॐदमिष्कृ॥ॐधीधनल॥॥

धजा॥ॐकूमदधजायनमश॥ॐश्रसा  
कमिन्द॥॥यताका॥ॐवजाकिर  
यताकायनमश॥ॐॐन्दस्यवक्रासि  
वाजसाह्यार्यवाज०सत्॥वाजस्य  
नय्यसवमाकवमहोमदितिना  
मवचसाकवामह॥यस्यामिदी  
सुवनमाविवहागस्यान्नादव  
विताधर्मसाविषत॥॥ॐगुला  
वतासनायनमश॥॥ॐन्दश्रावा  
हन॥ॐवक्रहिसर्वमवसिद्धिसा  
वरिष्कृमावक्रधवामलहासवीक  
मानासुवसांगलानवक्राधवम  
रुगवैनमस॥॥नताध्यायक॥  
ॐववावतसमावृटस्वर्णवर्णकि  
वीटिनं॥हाहृनयनंहाकृम्वकृवा  
लिविरावयत॥॥ॐन्दायध्यान  
पूष्यनमश॥॥जियाश्रुलि३॥ॐ  
ॐन्दायसुवाधियतयवक्रहृकाय  
नवावतासनायनमश॥॥ॐजाना  
वमिन्द॥श्रावाहृनादि॥वलि॥ॐवृ



॥ धिदेवताय कुरु पाताय वलिं गृ  
ह २ स्वाहा ॥ वद ॥ ॐ ॐ मानूदाय ॥  
॥ ॐ ॐ कुरु कुरु पाताय वलिं गृ  
ह २ स्वाहा ॥ वद ॥ ॐ अश्ववायद ॥  
॥ ॐ कयानस्थि कुरु कुरु नयनि  
॥ ॐ ॥ धूय ॥ दीय ॥ रुल ॥ ने  
॥ ॐ ॥ यतिष्ठ ॥ ॐ मनाशति ॥ जाय  
॥ ॐ ॥ ॐ नमः ॥ ॐ न्यायदवाय  
॥ नमासुते सवीयत्य पूर्वाधियतय  
॥ वशयकूयाकूषकस्मादि वका  
॥ सन्निधीरुव ॥ गुरुगन्धदि ॥ ॥  
कतादक्रिदादिगित्वायमकल ॥  
वे न ॥ ॐ कलाया ॥ आर्त्त ॥ ॐ दव  
स्यत्वा ॥ अस्रकली ॥ ॥ ॐ निवृत्ति  
नालनाय २ ॥ ॐ मांगल्यवृक्षाय २  
॥ ॐ स्वः लाकाय २ ॥ ॐ जनघ्ना ॥ स्वा  
य २ ॥ ॐ वज्राय २ ॥ ॐ प्रवज्राय २ ॥  
ॐ वेरुल्लुगाय २ ॥ ॐ जं वरुलाकाः  
वायमाताधियदवताय २ ॥ ॐ गुता  
यगाय २ ॥ ॐ यशुर्वदाय २ ॥ ॐ व

[illegible]







ब्राह्मणं सुखा जायत्या ॥ ॥ ॐ क  
माना ॥ ॥ कृष्णानय विस्तवनी ॥ ॥  
॥ ॥ दीप ॥ ॥ रुल ॥ ॥ नेवय ॥ ॥ य  
निहा ॥ ॥ ॐ मना कृति ॥ ॥ जाय ॥ ॥ सुग ॥  
महिषाय वि आनीन सर्वलाक क  
न करे ॥ ॥ काल रूप महावीर्य द ॥ ॥  
यादिन मा मुक्त ॥ ॥ अग गन्धादि ॥

तत ॥ ॥ यमि मदि गि गत्वा व वृण क  
ल ॥ ॥ ॐ तत्वा यामी ॥ ॥ आसनी ॥  
ॐ द वस्यत्वा ॥ ॥ असू कर्ण ॥ ॥ ॐ नि  
वृहि ता व ॥ ॥ यन म ॥ ॥ ॐ गुरु दा व  
का यन म ॥ ॥ ॐ जन ॥ ॥ ला का यन म ॥  
ॐ वृद्धि ॥ ॥ खा यन म ॥ ॥ ॐ धा ता य  
न म ॥ ॥ ॐ विधा ता यन म ॥ ॥ ॐ का  
कि न्ना यन म ॥ ॥ ॐ स्व न व ॥ ॥ य वि  
स्रि द व ता यन म ॥ ॥ ॐ दाय व ॥ ॥  
गा यन म ॥ ॥ ॐ साम व दा यन म ॥ ॥  
ॐ शु का यन म ॥ ॥ ॐ धने थ ना यन  
म ॥ ॥ ॐ विही ष ॥ ॥ यन म ॥ ॥ ॐ कृ या

यन म ॥ ॥ ॐ विष्णु वन म ॥ ॥ ॐ मध  
द ना यन म ॥ ॥ ॐ पूष्य माला यन  
॥ ॥ ॥ वद ॥ ॥ ॐ वत्ता वि ॥ ॥ ॐ धना य  
वी ॥ ॥ ॐ अयन्ना ॥ ॥ अग्नि दे वि वरु  
॥ ॥ ॐ यम मध ॥ ॥ ॐ यव ॥ ॥ ॐ यरु हि न्द न  
॥ ॥ ॐ अर्य वा जा ॥ ॥ अय रु द्वा ज सा ना व य  
॥ ॥ ॐ अय रु उ द्वा ण ॥ ॥ ॐ स्वा हा ॥  
ॐ यत य न्क स वि न ॥ ॥ ॐ पूषा सा दि व  
दि व सो रु ग मा सू व नि ॥ ॥ ॐ न्द्रा या  
वा पृ थि वी सि धू व हि ता दि से ॥ ॥ ॐ अ  
दि नि षा र्म य स न ॥ ॥ ॐ विष्णु नृ क  
वी र्या लि य्वा वा र्थ य ॥ ॥ ॐ या स्थि वा नि  
वि म म व जा पू सि ॥ ॥ ॐ या ॥ ॥ अस्त्र का य  
द रु व ॥ ॥ स ध र्म वि व कृ मा ण रु  
॥ ॥ ॐ वा गा या विष्णु वत्ता ॥ ॥ ॐ दि  
वा वा विष्णु ॥ ॥ ॐ त वा पृ थि व्वा म हा वा  
विष्णु ॥ ॥ ॐ वा व न वि का न् ॥ ॥ ॐ रु हि  
रु रु व स ना पृ ण स्वा यु य द्वा द कि  
॥ ॥ ॐ धा न स द्वा दि षू वत्ता ॥ ॥  
ॐ वृ रु स्य न रु ॥ ॐ विष्णु व ना ट ॥



शुक्रवाजा॥ शुक्रगन्त्राया॥ शुक्र  
नाय॥ शुक्रनादवी॥ शुक्रसंज्ञा॥  
शुक्रसंज्ञा॥ शुक्रविष्णुर्क॥ शुक्र  
वावा॥ शुक्रस्थित॥ ॥ धृजा॥  
शुक्रसंज्ञा॥ धृजायनमः॥ शुक्र  
मन्त्र॥ ॥ यताका॥ शुक्रसाक्षि  
नयताकायेनमः॥ ॥ वद॥ शुक्र  
वृद्धाक्षारुम्भनमसिद्धवृद्धाक्षः  
संक्रुसंज्ञनीक्षवृद्धाक्षमरुस  
दनमासीद॥ ॥ शुक्रकलासना  
यनमः॥ वृद्धाक्षवाहन॥ ॥ शुक्र  
हियादागटावाविटीनां गटान  
यर्थन्यसंज्ञायावाहिः ॥ विशाधवा  
यामवगीमयानं पाहिलमस्मांरु  
गर्वनमः॥ ॥ ध्यान॥ नागया  
सधर्वददं वन्नाययुक्तिविग्रहं  
॥ ॥ शुक्रधवलं ध्यायन् वृद्धाक्ष  
कवासनं॥ ॥ श्रियांजलि ३॥  
शुक्रवृद्धायजवाधियनयया ॥  
रुक्मायमकवासनायनमः॥

शुक्रसंज्ञा॥ शुक्रवाहनादि॥  
वलि॥ शुक्रयताधियनयया ॥  
लिङ्गद्वयस्वाहा॥ वद॥ शुक्र  
स्वाहायानायस्वाहायानाय स्वाहा  
वद्वयस्वाहा॥ शुक्रयस्वाहावा ॥  
स्वाहामनसस्वाहा॥ शुक्रकालाक्ष  
गयालायवलिङ्गद्वयस्वाहा॥ शुक्र  
वृद्धानाम॥ ॥ धृय॥ दीय॥ रुक्  
नेवद्य॥ यतिष्ठामनाक्षुक्तिजाय ॥  
रुक्॥ वावृद्धवृद्धनाधीर्गमकवा  
सनगामिर्नसवालकालाक्ष ॥ रुक्  
द्यं पादाक्षरुम्भनमाप्नुत॥ शुक्रग  
न्त्रादि॥ ॥  
शुक्रवाहनादिदिगत्वा॥ कृववकव  
सार्चनी॥ शुक्रत्वायामी॥ शुक्र ॥  
शुक्रदवस्यत्वा॥ शुक्ररुक्॥ ॥  
शुक्रवाहनाक्षयनमः॥ शुक्रवृद्ध  
सावृक्कायनमः॥ शुक्रसत्यलोकाय  
नमः॥ शुक्रविहवणाखायनमः॥ शुक्र  
जयायनमः॥ शुक्रविजयायनमः॥



ॐ ह्रज्रुगायनमः॥ ॐ पीतवल्गु  
 यद्गोविन्दवक्त्राय नमः॥ ॐ यात  
 वदसनमः॥ ॐ कविशङ्कराय नमः॥  
 ॐ श्रुतवक्त्राय नमः॥ ॐ बह्वेन  
 मः॥ ॐ कनकवदनमः॥ ॐ पद्मनाभा  
 यनमः॥ ॐ मार्कण्डेयानमः॥  
 ॐ विविक्ताय नमः॥ ॐ वामनाय  
 नमः॥ ॐ पूष्यमालाय नमः॥ ॥  
 वद॥ ॐ वत्सविष्टं॥ ॥ ॐ यदवा  
 सादिवाकादशास्त्रपृथिव्यामथका  
 दशास्त्रश्रुतिनामहिनेकाद  
 शास्त्रतदवासाय रुमिर्मरुषध्वं॥  
 ॐ नमः॥ ॥ ॐ उरुशान्दव  
 सवितः॥ यविशुलासवनवर्माय  
 नादिविद्युतः॥ ॥ ॐ पुनर्द्विष्टः  
 सुवर्तवीर्यदाम्नानरुमः॥ कुवे  
 रागिनिष्टः॥ यस्यावृष्टिष्विष्ट  
 मः॥ ॥ ॐ विष्टः॥ ॐ वृष्ट  
 नः॥ ॐ यातवेदसः॥ ॥ ॐ श्रु

[illegible]



कारुगवन्नमस्तु ॥ ॥ ध्यानं ॥ कृवेव  
मयमासीनं सर्वगं सर्वविग्रहं स्वर्णं  
द्वयंगदार्कं वारुणाधियतिप्रदं ॥  
त्रियंजलि ॥ ॐ कृवेनायधनाधियत  
यनकृवरुसायहयास्त्रायनमस्तु ॥  
वद ॥ ॐ कृविदंगज ॥ आवाहनादि ॥  
वलि ॥ ॐ पिसाचकृपालायवर्लिगृह  
स्वाहा ॥ ॐ घृणंघृण ॥ ॐ एकपादकृ  
पालायवर्लिगृह स्वाहा ॥ ॐ नीलगावा  
ॐ कयानस्थित ॥ कृष्णनयविस्मयनं ॥  
धूप ॥ दीप ॥ रुलेनेय ॥ यतिश ॥ ॐ म  
नाहूति ॥ जाय ॥ स्तुत ॥ यकृष्ववंमहा  
कार्यं श्रुवाभूतं धनध्ववं वलाहव  
सर्वगं गदार्कं नमोभुत ॥ श्रु  
गंधादि ॥  
ततोऽग्निदिगकलशा चर्च ॥ ॐ तत्वा  
यामी ॥ आसनं ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ श्रु  
कृष्णं ॥ सिद्धिदावृकाय ॥ ॐ सि  
द्धिदाय ॥ ॐ वक्रवर्णं आदित्यादिद  
वताय ॥ ॥ वेद ॥ ॐ श्रुयन्नाश्रु

निर्वैविवत्सु ॥ त्वयस्मधयव  
दुपहिन्दन ॥ श्रुयंवाजाश्रुयवृवा  
जसागावय ॥ ॐ श्रुयवृजद्वया  
स्वाहा ॥ ॐ वेदाहमर्त ॥ ॐ श्रुवृ  
नव ॥ ॥ धजा ॥ ॐ कृमदधजायन  
म ॥ ॐ श्रुसाकमिन्दु ॥ ॥ यतका ॥  
ॐ श्रुसाकमिन्दु ॥ ॥ यतका ॥  
श्रुवाना ॥ ॐ श्रुगणनायनमस्तु ॥  
श्रुनिश्रुवाहनं ॥ ॐ श्रुद्विस्तुम  
वसिद्धिसाधुमृनिषवीवेवतासि  
स्वाहा ॥ ॐ आवतीवाकगणनसाधुम  
धर्जनकृकवनमस्तु ॥ ॥ ध्यानं ॥  
सफाधिपं वविशानां श्रुमालाकम  
धुर्वीवालासालाकूलं नर्कं श्रुगस्तु  
श्रुकिधवर्क ॥ ॥ त्रियंजलि ॥ ॐ श्रु  
मयर्तं जाधियतयशकिरुसाय  
गासनायनमस्तु ॥ ॥ वेद ॥ श्रुनिर्म  
दो ॥ आवाहनादि ॥ वलि ॥ ॐ श्रुय  
नककृपालायवर्लिगृह स्वाहा ॥  
ॐ श्रुमयर्कं ॥ ॥ ॐ कयानस्थित



ॐ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ॥ धूय ॥  
 गाय ॥ रुल ॥ नेवय ॥ पुतिछा ॥ ॐ म  
 नादूति ॥ आयभाउ ॥ अग्नयजमा  
 शीनमहातज ॥ समयुरु ॥ वकमाः  
 लाववधवैहाकिहर्त्तनमासुत ॥  
 अयगन्धादि ॥ ॥  
 ततोनेमत्यका ॥ नेमत्यकलगावै  
 ली ॥ ॐ तत्त्वामिमी ॥ असनी ॥ ॐ दव  
 सत्वा ॥ असूक्ष्मी ॥ ॐ कार्त्तिक  
 वृक्षाय ॥ ॐ सिद्धिदाय ॥ ॐ वज्र  
 दधुअधिदवगाय ॥ ॥ वेद ॥ ॐ  
 स्वस्तिन ॥ ॐ अक्र कर्मकर्मकृत् ॥ ॥  
 रुतावामया रुवा ॥ दवक्ष ॥ कर्मकृ  
 त्वास्तुतसुव ॥ ॥ ॐ विरु  
 क्ताव ॥ रुतामद्वैसा ॥ स्थितस्य बाध  
 स ॥ सविता ॥ नृवक्षसम् ॥ ॥  
 धजा ॥ ॐ वामना ॥ रुधजाय ॥ ॐ अ  
 स्माकमिन्द्र ॥ ॥ पदाका ॥ ॐ रवज्ञ  
 क्षितपताकाय नमः ॥ ॐ यातवेद ॥  
 ॐ यतासनाय नमः ॥ ॥ नेमत्य

श्रीवाहनै॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 स्वविष्णोर्लवतात्रयि सावर्तधेशममा  
 ध्वन्यादिस्त्रिधाधिनाथलाकष्यबल  
 रुगवन्नमस्क ॥ ॥ ध्यानं ॥ वक्रतर्गुस  
 वावूर्त्तनीलात्यवदवपुर्हृत्कृपापिया  
 लियसार्धपिवर्तनवाकसंध्यवर्त्त ॥ ॥  
 क्रियांजलि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 पतयस्वमहत्माययतासनायनमः  
 वद ॥ ॐ यन्मयवी ॥ श्रीवाहनादि ॥ ॥  
 वलि ॥ ॐ श्रीगिजिह्वाकृष्णालायवर्त्त  
 गृह्ण ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ यष्टयष्टमवृत्त ॥ ॐ  
 गिमातव ॥ ॐ रुंयावानाद्विदथषूजगम  
 यष्ट ॥ श्रीगिजिह्वामनवष्टमववृत्तसावि  
 त्रिनादवा ॥ ॐ वसागमनिरु ॥ ॥  
 ॐ कयानयिर्गु ॥ कृष्णनयविस्त्रवर्त्त ॥  
 धूय ॥ दीय ॥ रुल ॥ नेवय ॥ युक्ति ॥  
 ॐ मनाकृति ॥ जाय ॥ सु ॥ नेमयदि  
 सिनाथस्त्री ॥ वावूर्ध्वमहमय ॥ वक्रमा  
 ससदायीर्ति ॥ खड्गपानिनभापुत ॥ श्री  
 रुगन्नादि ॥ ॥



तमावायुवाकावायुवाकलशावर्षी  
 ॥ ॐ नत्वायामि ॥ ग्राही ॥ ॐ दवस्यता  
 ॥ ग्राहकपी ॥ ॐ धृतिवृत्ताय ॥  
 ॐ सिद्धिदाय ॥ ॐ गवृत्तग्राहिदवता  
 यनमः ॥ ॥ वद ॥ ॐ धातमिन्नूपात्र  
 दाग्राहिदवायगावृत्तग्राहकवर्षीगवृ  
 नास्ययुगासायगुपितवारुवकिमा  
 नामध्यात्रीविषतायुर्गका ॥ ॐ ग्राहा  
 रुडाः कृतवायुवृत्तिवृत्तादद्वासाग्रा  
 यत्रीतास्यद्विदशदवानायाथास  
 दमिवृद्धग्राहसन्नयायवावकितात्रा  
 दिवदिव ॥ ॐ सय ॥ ॐ सिगवृत्तान्मि  
 वृत्तिगिवागां ॥ ॐ वृत्तवृत्तदथंनवप  
 कोक्तमग्राह्यावृत्तापुंस्यज्ञानियरु  
 ॐ विष्णुमसामनननवृत्तामदवीयज्ञ  
 यज्ञियंयुद्धविष्णु ॥ ॐ ॥ ॐ सय ॥ ॐ  
 सिगवृत्तादिवंगवृत्तवृत्त ॥ ॥  
 धजा ॥ ॐ सर्वेनगधजाय ॥ ॐ ग्राह्या  
 कमिदु ॥ ॥ यताका ॥ ॐ धजाकिन  
 यताकायनम ॥ ॐ वायुवायाहिवा

तथयुतानाद्वयदातय ॥ पिवास्तु  
 सधन्नाग्राहियी ॥ ॐ मृगासना  
 यनमः ॥ वायुग्रावाहन ॥ ॐ धृतिव  
 रूममवृत्ताय ॥ मृगाधिवृत्तसहस्य  
 सिद्धिदायाधिय ॥ कावकव ॥ सहस्य  
 गृहानयुजीरुगवन्नमः ॥ ॥ ध्याने ॥  
 ॐ ग्राहीनद्विगवृत्तय ॥ विलाकधज  
 वृत्त ॥ ॐ धातमिन्नूपात्र ॥ ॐ धातमिन्नूपात्र  
 माम् ॥ ॥ ॐ योजलि ॥ ॐ वायुव  
 धजद्विगवृत्तय ॥ ॐ धातमिन्नूपात्र ॥ ॐ धातमिन्नूपात्र  
 नमः ॥ ॥ वद ॥ ॐ नववायु ॥ ग्रावा  
 रुनादि ॥ ॥ वलि ॥ ॐ कालवृत्त  
 गुयालायवलि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 नवृत्तया ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 यानवृत्त ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 वय ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
 ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥



पुनः ॥ ॐ नत्वाजामि ॥ आसुनः ॥ ॐ  
 दत्तस्यत्वा ॥ असूकपी ॥ ॥ ॐ मा  
 कदापुकाय ॥ ॐ पृष्टिदाय ॥  
 ॐ महाकालाधिपवताय ॥ ॥  
 वद ॥ ॐ स्वस्तिपैथा ॥ ॐ बृहस्पतय  
 विद्यायावधेनवकाहामिर्गं नृप  
 वाधमानस्यरुंजत्सनास्यमृत्वा  
 युधाजयन्नस्माकं भिक्षुवितावथा  
 नाम ॥ ॐ नीलग्रीवा ॥ ॥ ध  
 जा ॥ ॐ सुप्रतिष्ठाधजाय ॥ वद ॥  
 ॐ नृस्माक ॥ ॥ घनाका ॥ ॐ त्रि  
 मूलाक्षितयताकाय ॥ ॐ यत्त  
 गालादग्निनापच्यमानादहिमू  
 लनिहतस्यावधवति ॥ मातृभूम्या  
 गेष्टिषन्मातृलोषूददद्भुमुदृष्ट  
 ह्यावातममु ॥ ॥ वृषासनाय ॥  
 वृषा ॥ ॐ आवाहनः ॥ ॐ नक्षत्रि  
 वधववनमिष्टवकयावखट्वांग  
 धवलाक्षसादौलाकशरुतं व  
 वयस्सिद्धी गृहानयूजांरुगवं

[illegible]



पुनपकामकृत्वातिधन्यनासर्वा ४  
 युदिताजयम ॥ ॥धजा॥कुर्ह्य  
 नधजाय २॥कुर्ह्यस्माकमि ॥ ॥घ  
 ताका॥कुर्ह्यकाकिताकाय २॥  
 कुर्ह्यपूयर्ज ॥ ॥कुर्ह्यमासना  
 य २॥अननआवाहन॥कुर्ह्यद्रुहि  
 यातावधमाधवमुनामोगनाकिन्न  
 वमीयमानक्षयकावगन्तामबलाक  
 सार्द्धमननवकाधवमसदीय ॥ ॥  
 धाने॥अननकुर्ह्यनीकाकैरुत्तास  
 यविहृषितंविदूदामपुनिका ॥  
 कुर्ह्यवृष्टयवृष्टयम् ॥ ॥द्वितीयंलि  
 श॥कुर्ह्यविष्टयमाधियतययकुर्ह्य  
 स्तायकुर्ह्यमासनाय २॥वद॥कुर्ह्य  
 पियदा॥ ॥आवाहनादि॥वलि॥  
 कुर्ह्यकुर्ह्यकुर्ह्यपालायवलिगृह  
 शलाह॥कुर्ह्यमावृजा॥कुर्ह्यकयान  
 यि ॥कुर्ह्यकयानयविहृष्टनी॥धूयादी  
 य॥नेवय॥हृल॥युतिदा॥जाय ॥  
 हा॥कुर्ह्यकुर्ह्यमासनाय २॥वद॥कुर्ह्य

अतो आयन होरात्रयज्ञसामग्री ॥  
 प्रथमतो भूमिसारणी ॥ नामावाय  
 बलिप्रदाने ॥ वाह्यगोनयज्ञकर्म  
 अथकलशाचनमे ॥ ॥ ॥  
 वल्यवतया जोलन ॥ जज्ञजोलन  
 पा १ पुन ॥ पा २ कारिजन  
 पु १ पुन ॥ पा ३ का २ वका स्वसि  
 धुखो ईका ॥ पा ४ का ३ स्वसिमा लको  
 लका ॥ पा ५ का ४ होमकि प्र १  
 बदेयाकिमा ॥ पा ६ धले पचासून  
 लका ॥ पा ७ जज्ञास हले १  
 आरवत रक्षा ॥ पा ८ पंचपक्षव  
 पोलदयके ॥ पा ९ वास्तु जागया  
 कुडाव ॥ पा १० कलशाचनयाजो  
 मरुवापा ॥ पा ११ लनेमानको  
 नाय पोनाय ॥ पा १२ पु ४४ फेमिकील  
 धु-इता जजका ॥ पा १३ कुललका माल  
 दोपावा जापुजा ॥ पा १४ को लत्रयाडोल  
 याहाडु थापिना ॥ पा १५ चामालको  
 वाकाकवा दृष्टि ॥ पा १६ पोपावापात ८  
 कलपका पवपता ॥ पा १७ पु ४५ के जा  
 अउवाल छासवि ॥ पा १८ मासखिच  
 मेसियो मताकि ॥ पा १९ मुखिच  
 ॥ पा २० हो जा लखिच  
 आया पा वा ॥ पा २१ लमोजा सन  
 आया रु वा ॥ पा २२ नोक कासि  
 बालाल यलावेना ॥ पा २३ पेल साखलि  
 लि त्वाक १ ॥ पा २४ उद नकाशि  
 ॥ पा २५ भागकेशर



पादस्थापनया  
 कलशपूजां जो  
 लनमालको  
 काविअतपाय  
 सिजलयाभंवा  
 गोल १ लुपले  
 जाहोपलेफोर  
 लयाकावले १  
 जाहयाकावले १  
 पो ५ पंचरत्न  
 दाफोलखान-  
 भुईखान  
 कुल्लका  
 भुईकाप १  
 चतुसमवाडन  
 कर्मियाहलपू  
 जायातकावका  
 य  
 यज्ञमराडपमाल  
 कोदानकेलिव  
 नयातकावगान  
 के ३ लिचित्र  
 फारिनमालको  
 बोके ॥ ॥  
 उधरवा. छत्रवा. कापत. इकाप  
 लका. सासौ. गनी. कलशपतिविये  
 पंचपल्लभथुसमनतयमाल ॥

अंगिस्थानयेऊ  
 हवपिथपूजाया  
 चकेअथवागगोश  
 पूजावाने  
 सिकायके  
 लासोमिलायाये  
 अंगिपालकरभा  
 यायेमाल  
 थुगूनसंतिपूराण  
 हवाचनयायेना  
 वापूरावर्तिगुरु  
 मराडलार्चनपादा  
 र्घ. मराडपसंस्कार  
 थनसंति. यवोद  
 क. उशल. कल्ल  
 अधिवासनयाये  
 कुल्लयाकेभ  
 टिवाकायेजो २  
 रात्रीसहाडीवा  
 सानिरभलरागि  
 मराडपया. कार  
 पति. पितृने. नवक  
 टकसिकतुनेल  
 मालकोनउयके  
 उधरवा. छत्रवा. कापत. इकाप  
 लका. सासौ. गनी. कलशपतिविये  
 पंचपल्लभथुसमनतयमाल ॥

अर्घपात्रसाधनम्  
 पा १ पुल १ १ १ १  
 अक्षत १  
 इका. झका. भुवा  
 भुर्जपत्र. कुल्लका  
 नुइकाप. फोसिकी  
 पु. आकिकान  
 हादवकूरापु ३६  
 मराडपउवोफुडा  
 विष्णोत. अष्टमङ्ग  
 ल. फेयेगां. खान  
 ला. पंचसूत्र. नाये  
 पंचहहि. सिकेत  
 फोलखानतये  
 विष्णुहरनवलि  
 पान  
 साडउज्जवाल. नव  
 लोकपालयाफाथ  
 नवलिछोये  
 शिवहस्तिकरामि  
 सिहासनप्रवेशे  
 किशली १ भेटी  
 यज्ञजोलनमाल  
 को  
 यथासुवेतायांभ  
 जमान. सिमतपा  
 १ हयेपारिवाथथा

सिताधा १ मज्ज १  
 अक्षत. लुपले १  
 बहपले १ पंचरत्न  
 सिङ्गकापलसपो  
 लविसें. जजमान  
 जोनके. यज्ञमरा  
 वामावर्तनडये  
 लासोमिलाकाडा  
 अंगिकायकल्ल  
 ये. वाशनसाह  
 खलिवाचपदपे ॥  
 यज्ञमराडपयापि  
 खालेरुसयजमा  
 नीननमछनादि.  
 याचकावसगोना  
 दिआसीविदिमि  
 आर्ति. दक्षिबने  
 नडयेकेमराडप  
 यानैमन्यहारनड  
 हाने ॥  
 स्थंडिलयाजोलन  
 पा १ कासमु. खंगुल  
 यक्षकर्मचने  
 लुपले. बहपले.  
 लुयाडका. वेणुडका  
 लसलाका. हासुकाप  
 अक्षत. दाफोखा  
 पाउका ॥  
 यथासुवेतायांभ  
 जमान. सिमतपा  
 १ हयेपारिवाथथा



१ जालनमाल  
 को जटावलनारि  
 वलगो ७ ला ७ वे  
 नालि भेटो  
 मित्रयार्धपात्रगो  
 कामपोला २  
 सिनयातलिंगो १  
 सिनया कसुला १  
 मासबाधुवापा २  
 मलिपात्रगव २  
 संखमालको  
 देशवलियातको  
 परापा १  
 पासुकाभालको  
 गवकाभाही  
 कुसलकाभाही  
 होतायनापातव  
 सत  
 मकुत भूषण  
 धनधार  
 निसिवलियातम  
 जातथेभालको  
 त्रियके  
 मर्जानाथेपुत्रया  
 ज्वलनदयक  
 लुयावकापु १  
 बहयावकापु १  
 लुयानुलसिपत्र  
 बहयानुलसिपत्र

लें बहया जोनाप  
 २ पातवस्त्रको १  
 लतिनंदयकेमाल  
 जोदानमाजोल  
 नमालको  
 जोयातवस्त्राल  
 कार वजिकोपा  
 निखावत्र १  
 दक्षिनामालको  
 वासजोल  
 जष्टादश १८  
 बाडश १६  
 ओलागसि  
 ग्रहसि १०  
 अष्टविंजीदीया  
 सि ८  
 स्वसिमालको  
 करामा मालको  
 कोसिकताभाही  
 जोनिनाग  
 हासा नुफि  
 पुलु पात ७  
 उगलुसिजो १  
 जोडहासापा १  
 भुथु मनाहासम  
 न जो १  
 खाना लासाफा  
 पुलिङगा फुंगादेव  
 तयग जो १ पुधुग

याताने जो

पा १ पुलुइला  
 ७ १ न्याला  
 ७ २ विनातपु  
 ७ ३ बागातपु  
 निषु ५  
 जनातयाध्व  
 तोयुध्व ७ ५  
 मासुध्व ७ ६  
 हाउध्व ७ ८  
 बाउध्व ७ ४  
 हाउध्व ७ ३  
 स्वतातयाध्व  
 तोयुध्व ७ ८  
 मासुध्व ७ १२  
 हाउध्व ७ १५  
 बाउध्व ७ २०  
 हाउध्व ७ २०  
 पचामतयाजोल  
 काविउड फं  
 काविधलीफं  
 घोल धानि  
 कछि कुल  
 खुडवाकुल  
 सारव धानि  
 कलागहलमाल  
 को कवानसह  
 ओसि इवसि  
 पलासि पोर ओ  
 हपहलमालको

शुवा धव चनुवा  
 प्रोक्षणी-अनख  
 यत्रयाआसनरा  
 धीआसनी नवीन  
 दयके  
 बहिजोलन  
 खानुवाफं १  
 मोरतिवा मु १  
 पुवा मु १  
 तेछो मु ५  
 हाऊहामोफं १०  
 नुईहामोफं १  
 सिइमा फं १  
 ईका फं १०  
 पल्का फं ११  
 मुगी फं १  
 कयेग फं १  
 साफयेग फं १  
 भुति फं १  
 हाउमासफं १  
 पल्माव फं १  
 वनागु फं १  
 मुस्याहाऊ फं १  
 कोलो फं १  
 नुमा फं १  
 लता फं ११  
 मुधु फं १  
 बालो मा २  
 सिधालि मा २  
 लुपु मा २  
 को फं २



आख्येय कृ ४  
 पाकि मु २  
 मताकि फ १२  
 सिमाफल मता  
 किमाधि मोसि  
 घवगो गुरु ५  
 गुलपाग ८  
 गतालो १०  
 वस्त्रालंकार हान  
 जोलनफशा

पलावा. ध्वजावा  
इलावा. पलेखा  
उफोखा. रूपकेशर  
होतान. अग्निं न्यास  
जप. छोत्रं. होता  
या. रुदि. शिर. नाभी  
सथियेके. अग्निगात्र  
त्री. अग्निमंजय लप  
विधिये. अग्निस्थाप

लाजाले  
थसवाला-सये  
सेवना-खायला  
दुयाला-बोकला  
केस्यला-हिवोव  
हि-आमला-कंगु  
लोप्याथला

---

सर्वनामप्रयत्ना  
पोतासरंग  
सपेना-हरिताल  
नधारी-बसि  
खंग-सलसिंद्र  
पातु-ह्यामुपातास  
बालयायु-अभीर  
परिसिंद्र-गेरु  
कशहयांनो  
जाकिकलचुं

---

परमिकलश १  
उवकलश १६  
इ-दुकलश १  
इवो-कलश १०  
आदित्यकलश १  
इवो-कलश १०  
मध्यजयकलश १  
इवो-कलश ८  
शिव-शक्ति २  
यक्ष-यक्षिनी २  
नागयो १  
गण-गुरुकलश २

चतुर्वेद ४  
 चतुर्गुण ४  
 जयादि ८  
 पंचलोकपाल ५  
 मातृका ५  
 भैरव ५  
 गंगादितीर्थ १२  
 दिग्कलश ४  
 निडाः शयन २  
 शान्तधारा १  
 सहस्रधारा ५  
 प्रणाम १  
 सला पान ३  
 नृफला  
 वयसि नृ  
 चाकुमधि  
 तसि केरा  
 पं वगव्यसाधन  
 सिजयाखोलागव  
 ल ११ अलागसो  
 अलागतचो सा  
 धल साड्ड साध  
 लीन स्वाक स्वा न  
 कुश बलि



यथाकर्मसंकुल  
प्राप्रतिमा लास्य  
लावविविधे जी  
न्यास विधे

कालसाधनी  
चतुर्तीर्थजल  
कुंदादक तीर्थदि  
क रत्नादक फ  
लादक अश्लोक  
नसादक शंखो  
दक पुष्पादक

गोश्रिङ्गमृत्तिका  
गजदन्तमृत्तिका  
हलमृत्तिका  
वराहमृत्तिका  
अश्वत्थमृत्तिका  
पद्मतडागमृत्तिका  
वन्दीकमृत्तिका  
गोकुलमृत्तिका  
गजस्थमृत्तिका  
अश्वत्थमृत्तिका  
विष्णुधारमृत्तिका  
शङ्खधारमृत्तिका  
पर्वताग्रमृत्तिका  
चतुष्पथनदीसंग  
ममृत्तिकां व

पर्वताग्रं नृपशरणं दीतीरद्वयंकुलं ॥  
वाल्मीकादिभिर्दत्तायात्रथाहवभभृगुः  
पद्मशङ्खद्वाराहाचगोष्ठादपि चतुष्पथान्  
मृत्तिकाद्वादसायास्तीवैकुण्ठं चामिनाकिनी

जातकर्मयाज्वलं  
तकनु विष्णु  
जिफो जायेवत्री  
सुष्माल गोव  
लवा सिद्ध लाये  
जेला हलु वापि  
वाक वि पालु इ  
मु इवा पिड आंगु  
वा वामिरवाइलु  
आंजमला  
हलयासलाका  
कर्म नामकर्म  
भुजपत्र हिरण्य  
सलाका चतुस्त्रम  
चंदन माल

निष्क्रमण फलजा  
सन अभिधाशन  
डाकर्म फल अन्न  
लुवहया मोडवा  
लुवहया मुलु  
वाकफला  
वनवधयना लु  
वहया जोना  
समावर्तनविवा  
हदी सा मज रु  
मांजीन लेजे न  
शन ह्यदिका या  
जोलनरमेनम

मूर्तिकलशडु  
वयाश्रीनाराय  
शास्त्रं १४ यासि  
वलगतसि  
द्विनासि  
वलासि  
पिलोघसि  
कुश  
समीसि  
देवदारु  
लाहसि  
अयामार्ग  
सयरसि  
चैकंकन  
बोमिघाडे  
अर्कपात  
उर्या

अष्टादशसि  
पलाश  
घाडिर  
अश्वत्थ  
चैकंकन सप्तदश  
वरा  
शमी  
देवदारु  
अयामार्ग  
करवीर  
उडम्बर  
स्यतार्क  
विल्व  
आसान

प्रश  
अशोक  
कस्मरा  
इन  
नामकाष्ट

घोडशसमिध  
पलाश  
घाडिर  
अश्वत्थ  
चैकंकन  
वरा  
श्रीखंड  
थासि  
समी  
देवदारु  
उकाखा  
उडवर  
विल्व  
आसान  
अशोक  
इन  
नामकाष्ट

पलाशवीरगोश्वत्थवैकुण्ठशिव  
शमीदेवदारुसमयामार्गकनपिर  
मुडम्बरस्यतार्कविल्वमाशान  
प्रक्षमांशोककस्मराभस्मजुन  
गफाष्टव समिधाष्टाशिवजु ॥



आन ओषधी  
 विजया  
 वल  
 गुह्री  
 लभ्यता  
 अतिवला  
 पाठा  
 सहदधी  
 सहदेवा  
 सतावरी  
 माहि  
 सुवर्चला  
 मापुष्य  
 हादि -

ज्ञानमोषधिभूतानो विजयालक्ष्मणापलेः  
 गुह्यगिरिवलापाठा सहदेवा सतावरी ॥  
 माहि सुवर्चला हादि दुःखानि योक्ताः पुण्य  
 पुण्य

पुरा मांसीवनाकुसुं हो लेयं रजनीदयं  
 अटीयममकमुस्मानि सर्वोषधिदशास्मरा

मोहि  
 जटामासि  
 बिहा  
 कूट  
 पाठर  
 कुंकुम  
 भिकम  
 हरदि  
 सुठी  
 संधक  
 चाईकसु

ASHA ARCHIVES

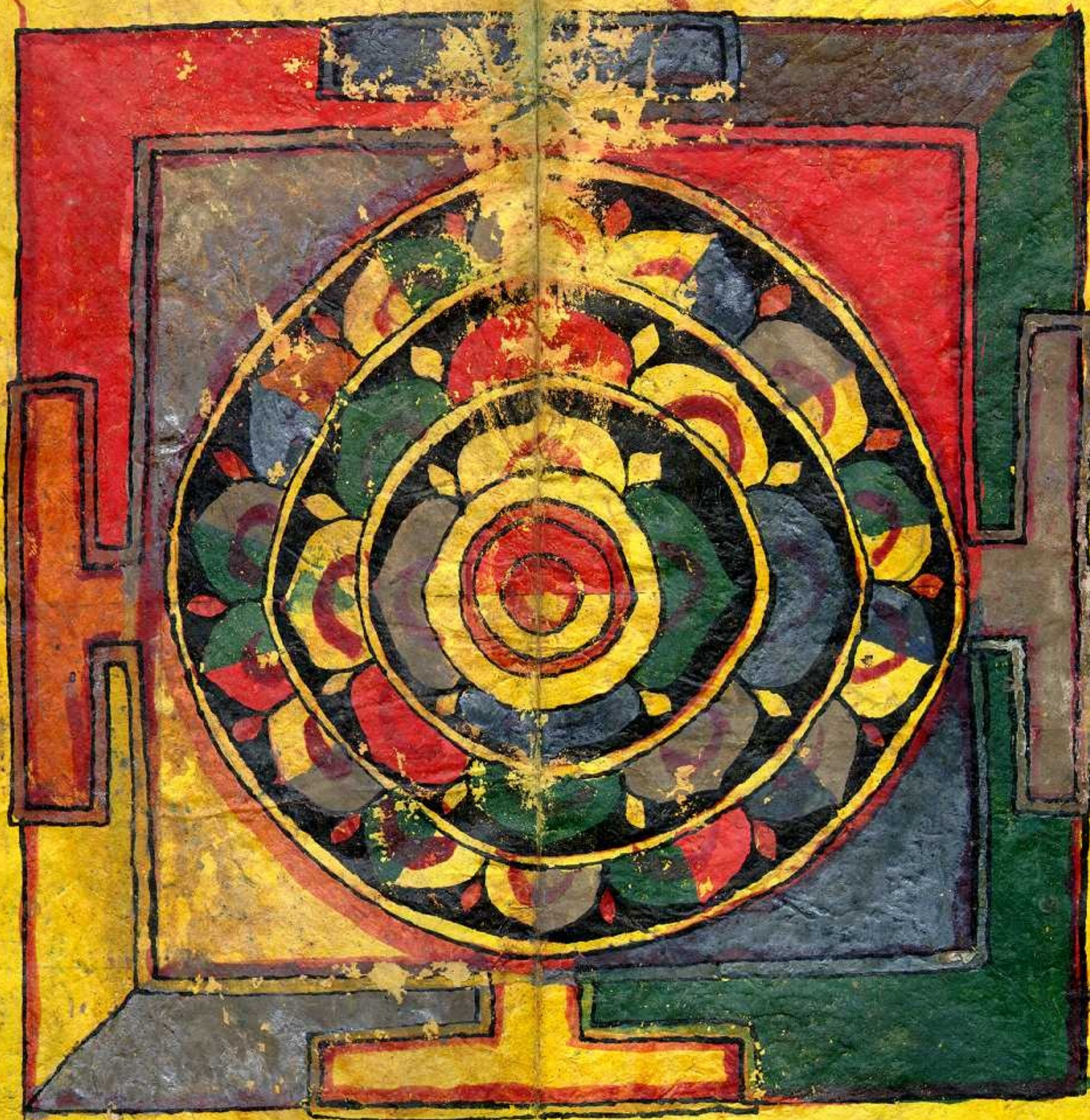
महाराष्ट्र

1.538 I

ASHA ARCHIVES

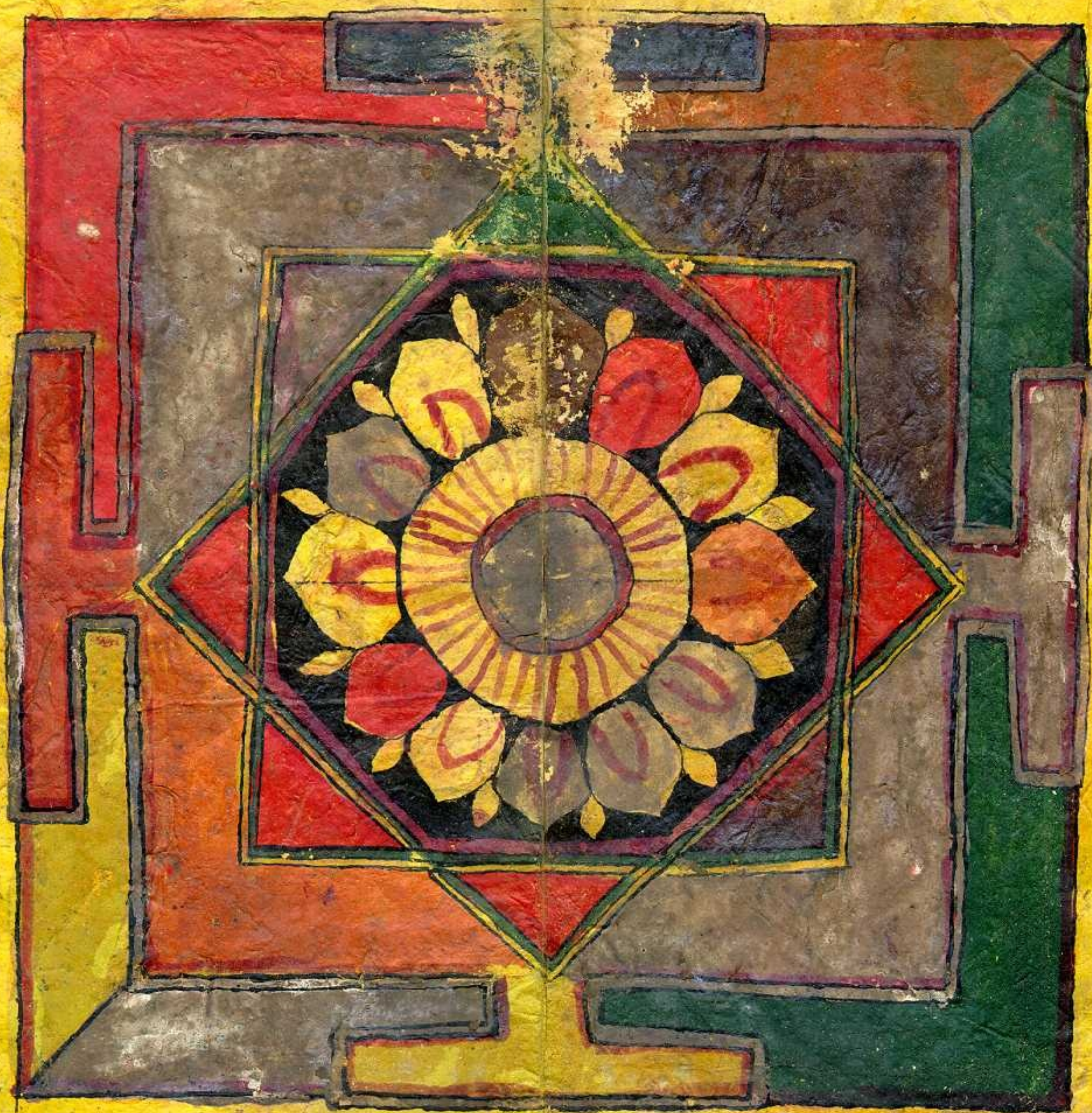


ॐ ह्रीं क्लीं ॐ





WSTHILBIL

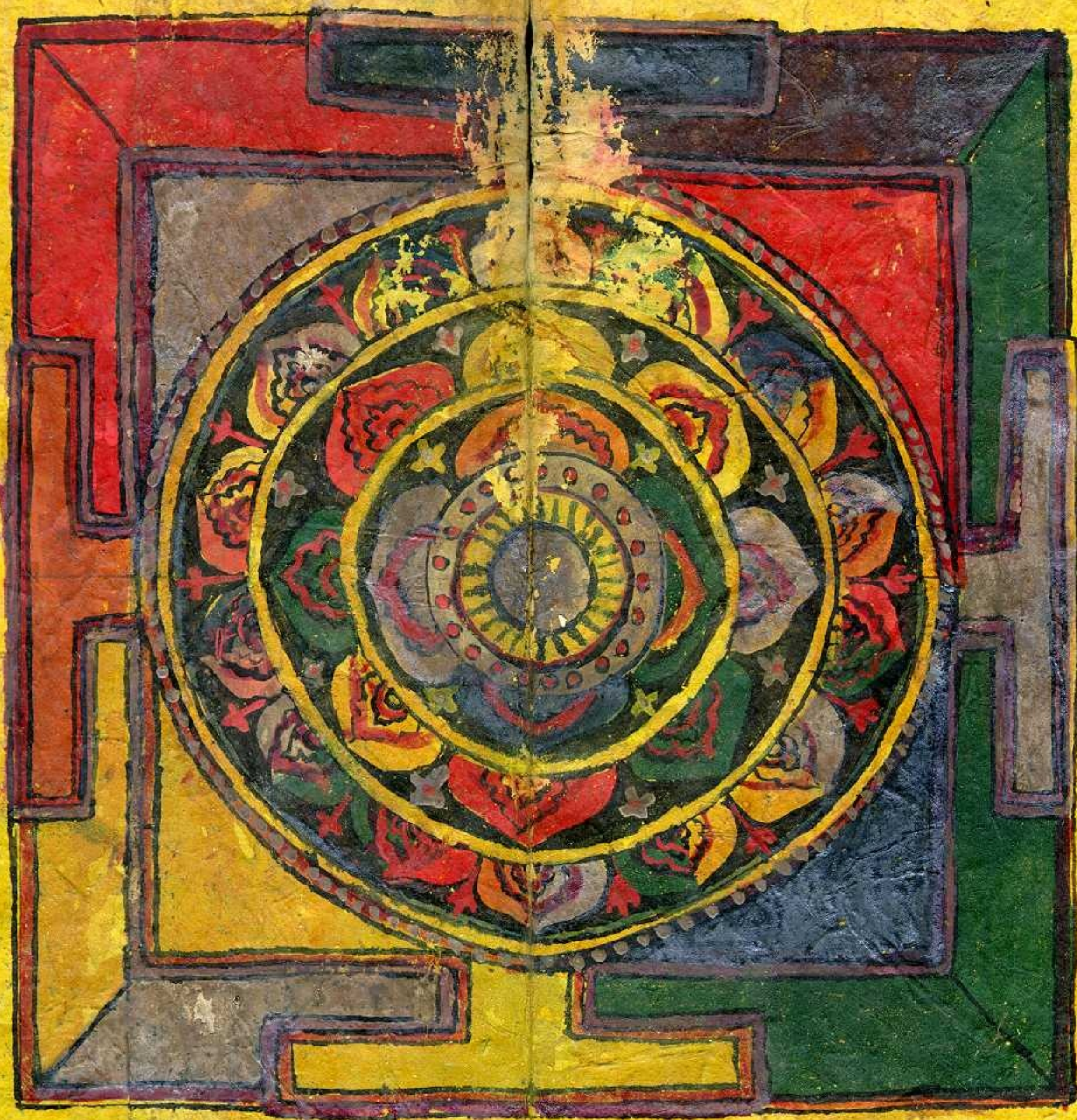




This is a vibrant, abstract painting. The central focus is a circular motif composed of several concentric rings. The innermost ring is a dark, textured circle. The next ring out is filled with a dense pattern of red, yellow, and green. This is followed by a ring of larger, overlapping shapes in red, yellow, and green, some with darker outlines. The outermost ring of the central motif is a thick, dark border. Surrounding this central circle is a large, rectangular frame made of thick, dark lines. The background within this frame is a mix of red, yellow, and green, with some areas appearing more textured or layered. The overall style is reminiscent of mid-20th-century abstract art, with bold colors and geometric forms.



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय





འཕགས་པའི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་





सूत्रसमग्रं । अधोऽङ्गसिद्धिर्द्वयं च  
कृपादिनमासुतं ॥ गुरुगन्धादिः ॥  
तमादुद्रोदिगकलगावर्षी ॥ उक्तं त्वा  
जामि ॥ आसने ॥ उदवस्यत्वा ॥ गुरु  
कृती ॥ उदववृत्ताय ॥ उदवायूच  
धियतय ॥ ॥ वेद ॥ उधामसुद  
निबिन्दावुद्गादकावृत्त्यतिशस्य  
तमावि ॥ वेदवायूपावनुनः ॥  
उक्तववायू ॥ ॥ धजा ॥ उक्तसुद  
जाय ॥ उक्तसुमाकमिन्दु ॥ ॥ यगाका  
॥ उक्तपद्मादिगयगाकायनमः ॥ उक्तप  
द्मानि ॥ उक्तसुसासनाय ॥ ॥ वेद  
आवाहनं ॥ उक्तपद्मदिविष्वाधियत  
सूत्रेण लोकनमादं विरुदवतादिः  
सर्वस्यभतास्यपतियुक्तावाविद्याध  
नमसुतर्गिवाय ॥ ॥ धाने ॥ यी  
नपीतं वरुवाकं वृक्षानं वरुमान  
नं ॥ रसयानं वविद्वादी ॥ दः ॥ उक्त  
कमपुर्ल ॥ ॥ त्रियांजलि ॥ १ ॥ उक्त  
वृक्षपुजापतययद्वरुकायडुद्रो  
मिपतयदं सासनायनमः ॥ ॥

वेद ॥ उक्तवृक्षपुजा ॥ आवाहनादि ॥ ॥  
वलि ॥ उक्तमयनादमहाकृत्पालायव  
लिगृह ॥ २ ॥ वेद ॥ उक्तविष्वाकवृत्  
॥ उक्तपानयविस्वर्षी ॥ उक्तकयानस्थिर्ग  
॥ धूय ॥ दीय ॥ रुल ॥ नेवद्य ॥ जाय ॥  
मुक्ति ॥ उक्तवृक्षपुजापीतवृत्तवृक्षकृ  
नयनायनं ॥ यक्तकाकववीरुर्क ॥ उ  
द्रोविपनमासुतं ॥ गुरुगन्धादिः ॥ ॥  
नेमस्यस्यपूर्वथागिनीगुरुकलगायू  
जा ॥ यगासनाय ॥ १ ॥ धाने ॥ उक्तविष्  
सूत्रनिर्द्वर्दं विखावानसमन्वितं  
॥ दक्षकविपुर्नविष्णुं गुरुवृत्तविरु  
वयन् ॥ ॥ त्रियांजलि ॥ १ ॥ उक्तगुरु  
नाजाय ॥ ॥ वेद ॥ उक्तवृक्षपुजा  
सतिस्थमकर्मवमगतिगकिस्थम  
स्थममः ॥ १ ॥ मः ॥ १ ॥ ० ॥ सावमग  
तिस्थमयक्तनकल्यक्तम् ॥ आवाहना  
दि ॥ वलि ॥ उक्तगुरुकलगायवलिगृ  
ह ॥ २ ॥ वेद ॥ उक्तवृक्षपुजा ॥ धूय ॥ दीय ॥  
रुलनेवद्य ॥ पुक्ति ॥ उक्तमनाशुति ॥  
जाय ॥ साय ॥ कर्तकादकिर्षीरुर्क



वामरुक्मवर्षयवीनीलमद्याकृतिवृ  
र्षींशुभुवाजिनसाम्यहं॥शुभुगन्धादि॥  
यन्त्रिभारुवशीकलपूजा॥शुभुमकवास  
नायश॥॥ध्यान॥शुभुयद्मासनस्तिर्ग  
दवीनीलात्यनदपह्री॥सिंदूरयद्म  
हर्षवकान्तिथोवनसंस्तिर्ग॥द्विर्गोऊ  
लि॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
शुभुवाहनादि॥वलि॥शुभुमूर्त्युयवलि  
गृह॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
यद्मरुलनेवय॥यन्त्रि॥शुभुमन्नादृति  
॥जाय॥शुभु॥शुभुमन्नागस्तिर्गान्द  
वीलाकृयसूपूर्जिर्ग॥सिन्दूराल्यन  
यानिव॥शुभुदवीत्यनसाम्यहं॥शुभुगन्धा  
दि॥

यन्त्रिभारुवशीकलपूजा॥  
शुभुमूर्त्युयनायश॥ध्यान॥यद्मासन  
स्तिर्गान्दवीशुभुश्रीमूर्त्युय॥  
शुभुदर्वनरुक्मवर्षयवीनीलमद्याकृतिवृ  
र्षींशुभुवाजिनसाम्यहं॥शुभुगन्धादि॥  
॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥

वद॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
य॥शुभुमन्नादृति॥यन्त्रि॥जाय॥शुभु॥  
शुभुसर्पयद्मवर्षयवीनीलमद्याकृतिवृ  
र्षींशुभुवाजिनसाम्यहं॥शुभुगन्धादि॥

वायुवायुदृक्॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
शुभुनवासनायश॥ध्यान॥कपालमाला  
रुलनेखद्वागकायरुक्मवर्षयवीनीलमद्याकृतिवृ  
र्षींशुभुवाजिनसाम्यहं॥शुभुगन्धादि॥  
यानिव॥शुभुदवीत्यनसाम्यहं॥शुभुगन्धा  
दि॥  
शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥  
शुभुश्रीमूर्त्युय॥शुभुश्रीमूर्त्युय॥



श्रुगंधादि॥

वायव्यस्य पूर्वगणकलश॥ ॐ मू॥ स  
नाय॥ १॥ ध्यानं॥ गजासनमकदनीप  
दनालद॥ १॥ यमी॥ यदुर्जं स्वदकव  
लशूक॥ यधु॥ धाविनी॥ नागयज्ञायवीर्यं  
वविष्णवाजनमाम्बु॥ ॥ क्रियाजालि॥  
ॐ गणपतिमूर्त्ये १॥ वद॥ ॐ श्रीगुरुन  
मोऽस्तु॥ वद॥ नमो॥ कामद्वयमागहि॥ म  
हान्महोहि॥ नमिहि॥ श्रीवाहनादि॥  
वलि॥ ॐ गणपतिमूर्त्ये वलिं गृह्ण २  
स्वाहा॥ ॐ गणानां स्वाहा॥ धूपदीप रत्न  
नेवय॥ यति॥ ॐ मनो॥ दू॥ जाया॥  
हो॥ ॐ सुवर्णवर्णकर्मवी॥ सर्वविधि  
निवाचनी॥ विष्णुवग॥ १॥ द॥ मू॥ १॥  
टीनमाम्बु॥ ॥ श्रुगंधादि॥ ॥

ॐ गणानां यद्यपि मयुर्वकलशपूजा॥  
ॐ यद्वासनाय॥ १॥ ध्यानं॥ ॐ कुरुमा  
वृणसाहाय्यं॥ श्रुयुक्तकधाविनी॥ सर्व  
गामुविद॥ १॥ स्वगुर्वयनमाम्बु॥ ॥  
क्रियाजालि॥ १॥ ॐ गुर्वमूर्त्ये नमः॥ ॥

ॐ वदय॥ ॥ श्रीवाहनादि॥ वलि॥ ॐ  
गुर्वमूर्त्ये वलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ वद  
स्वाहा॥ १॥ यदीयनेवय॥ यति॥ ॐ  
नमो॥ ॥ जाया॥ हो॥ सुवर्णवर्ण  
संकाशी॥ युक्तकर्मकनदयी॥ सर्वगामु  
क्रियाहि॥ १॥ गुर्ववन्नमाम्बु॥ ॥ श्रुगंधा  
दि॥ ॥

शिवशक्ति कलशपूजा॥ न्यासा॥ श्रुयया  
वपूजा॥ गायत्री मन्त्रादिना श्रुयी॥ ॐ  
नमो॥ ॥ श्रीसने॥ ॐ दवस्यत्वा॥ श्री  
सुर्करी॥ ॐ गनूजास्त्राय॥ १॥ यद्वास  
नाय॥ १॥ वद॥ ॐ सुवर्णवर्णसिगमूला  
मिर्वक॥ शिवागा॥ यदीवदुर्वदुर्दथं नम  
यको॥ काममात्मावुन्दा॥ स्वशानियरु  
०॥ सिधाम॥ सामतननवो॥ मदवीयरु  
यक्रियेयद्वि॥ धि॥ १॥ सरु॥ १॥ सुय॥ १॥  
सिगमूलादिर्वगदुस्व॥ १॥ यद्वास  
नने॥ ॥ ध्यानं॥ नावायनीननाथा  
१॥ स्ववकुगदाधवशल॥ श्रीसाहू॥ १॥  
॥ शिवगनूजायजनमाम्बु॥ ॥ मू॥ १॥ न



थं छिलस्य दक्षिणादि स्य क व स  
पूजा ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्री सन ॥

[illegible]



मृत्युञ्जयकलशपूजा॥ ॐ नमो या  
 मि॥ आसने॥ ॐ दवस्यत्वा॥ असूक्त  
 ॥ ॐ द्वात्रिंशे नमः॥ ॐ द्वात्रिंश  
 वी॥ वृषासनाय २॥ ॥ आवाहने॥  
 ॐ ब्रह्मावाहयिष्यामि त्रिभुवनं  
 पानिनीं ॥ ॐ ह्रीं कवस्व त्वत्तन म  
 हागणगणेश्वर ॥ ॥ ध्याने॥ ॐ  
 कृष्णकृष्णदत्तकृष्णवन्द्यमष्टलम  
 ध्वजं ॥ ॐ यत्नाय नमः कृष्ण मृत्युञ्ज  
 यविहावयतु ॥ ॥ त्रिंशजलि ॥  
 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ॥ ॐ त्रिंशजलि ॥ सु  
 हिताय २॥ वद॥ ॐ नमो नमः ॥ ॐ

(गामयर्लिंगपूजा॥ ॐ गामयर्लिंग  
 यश ॥ ॐ शिवाना ॥ ॥ सूषनाग  
 पूजा ॥ ॐ सूषनागयश ॥ वद ॥ ॐ  
 या ॥ ॐ षवायारुधानानायावाचन  
 स्यतां ॥ वनू ॥ यवावटषूषावतन  
 ॥ ४ सूर्योद्गमनस ॥ ॥ मूनकृतता  
 यापनरुवसाथनामूनकृतप्रतिमा ॥  
 मूनककूरुसुवविधिर्धूपूजायाय ॥  
 एकादशीव्रतायापनरुवसा ॥ ल



तत्कार्ययदासाधनं ॥ ॥ दक्षिणायुष्य  
 राजर्नकमधुलपविश्वदनानि ॥  
 पविश्वयाकृतीयाण ॥ आश्वत्थलीत्र  
 वृक्षानीसमार्जनकृणुदपयमनकृ  
 णसमिधश्चकण्डवश्चाश्वत्थतिल  
 तधुलदकलियनयुग्मशयुग्मान्या  
 लीरुनी ॥ ॥ ॐ यागयाग ॥ विधा ३ ॥  
 ॐ यविश्वश्रुति ॥ यविश्वश्रुदनी ॥ ॐ वि  
 श्वानवाट ॥ यविश्ववन्धनी ॥ आर्यया



उनिधाय॥ॐ यत्सु ० वरु॥थां  
 नायक्योर्ली॥ॐ अनिसितासी॥सं  
 माऊने॥ॐ समूडादूर्मि॥डदकयू  
 वली॥ॐ दवीवाया॥यविगुनालाठ  
 ने॥ॐ यषा॥ॐ ॥डदकयविवरु  
 ने॥ॐ सविगुर्व॥गीवन॥ॐ देयाय  
 कर्म॥ॐ सर्ववसुसिचने॥अग्निप  
 नीतथाम्भस्त्वया॥ ॥आश्वक्कली  
 वरुक्कवायक्यने॥ॐ यत्सु ० ॥  
 अस्वरुली॥ॐ महीनां पयासि॥युतध  
 वने॥ ॥अथ वरुसाधने॥ॐ धान्य  
 मसि॥ककूठसत॥ॐ कूकूठासि ॥  
 समिधनकूठने॥ॐ वषट्कमसि॥  
 सूत्रानिधाय॥ॐ यवायूत०॥रुष  
 निरीकली॥ॐ दवाव० सवि॥वरु  
 रु॥उनिधाय पून० धान्यमसिति  
 ॥विधाकूर्यात्॥ ॥आश्ववन् अग्नि  
 म॥अनिधाय॥ॐ ॥ॐ ॥ॐ ॥  
 याभकायावदूलिकासत॥अथ वरु  
 थूय॥धनकानक॥वरुपूरा॥व  
 न्दनादि॥पूषा॥ॐ गानमाय०॥

ॐ रुद्राजाय०॥ॐ विष्णुमित्राय०॥  
 ॐ यमदग्नेय०॥ॐ अरुय०॥ॐ क्र  
 कव०॥ॐ यवस्याय०॥ॐ वक्र  
 ०॥ॐ विष्णवे०॥ॐ मरुत्वाय०॥  
 वद॥ॐ यजाय०॥ ॥  
 अग्निपद्माल्यकु० नमः॥अश्वक्कली  
 ने॥वद॥ॐ अयहता॥ॐ तन्मादसा॥  
 ॐ वयक्योर्ली०॥ॐ गानावमि॥ॐ  
 दवस्यत्वा॥अस्वरुली॥ ॥ॐ ॥ॐ  
 त्वा॥युतं वरुअलाठने॥ॐ सविगुर्व  
 ०॥डत्सवनसंप्रवने॥ॐ यविगुष्टा॥  
 यविगुधावली॥ॐ तआसि॥युतपूज  
 ने॥आश्ववकली॥यजमानावायोन॥  
 आश्वपापहर्तृत्वा॥आश्वपापहर्तृ  
 यव॥आश्वपापहर्तृमाकं सर्वमाश्व  
 युतिहिन॥तत०॥ॐ वांगरुहीत्वापूर्व  
 वसंस्कारं॥ॐ दवीवाया॥ॐ यषा  
 ॐ ॥ॐ सविगुर्व॥आम्यअग्निक्  
 ०॥ॐ कृष्णस्याव॥ॐ अदित्येर्ध्वदने  
 ॥ॐ धादकं यलीननिधाय॥सववि  
 ॐ वरुनखर्ग०॥ॐ कर्षावर्चने॥



[illegible]

ययैधवनाय॥ ॐ स्वस्तिनस्तु ॥ ॥  
 ॐ अग्नयधीमन्नाय॥ ॐ मादिरुर्मा  
 पदाकू॥ ॥ ॐ अग्नययातकर्माय॥  
 ॐ यागायस्वाहा॥ यागायस्वाहा  
 नायस्वाहा॥ वरुधस्वाहा॥ ॐ यागायस्वा  
 हावायस्वाहामनसस्वाहा॥ ॥ ॐ  
 अग्नयनिमस्रुनाय॥ ॐ वक्रयक्र  
 न॥ ॥ ॐ अग्नयनामकवनाय॥  
 ॐ कायस्वाहा॥ कसेस्वाहा॥ कतमसेस्वा  
 हा॥ स्वाहा॥ धिमाधीनायस्वाहा॥ मनः  
 युजायस्वाहा॥ यिक्तं विक्रान्तायादि  
 त्येस्वाहा॥ दित्येमध्येस्वाहा॥ दित्येसमृती  
 कायस्वाहा॥ सवस्वत्येस्वाहा॥ सवस्वत्ये  
 पावकायस्वाहा॥ सवस्वत्येवृहस्यत्ये  
 स्वाहा॥ पूषस्वाहा॥ पूष॥ प्रयथायस्वा  
 हा॥ पूषन्नभिषायायस्वाहा॥ त्वष्टस्वा  
 हा॥ त्वष्टुद्वीपायस्वाहा॥ त्वष्टुपूष  
 नूपायस्वाहा॥ विश्वस्वाहा॥ विश्वेनि  
 रूपायस्वाहा॥ विश्वेधिपिविश्वय  
 स्वाहा॥ ॥ ॐ अग्नयरुलयाधनाय  
 ॥ ॐ यगरुलिनि॥ ॥ ॐ अग्नयग्न



नयानाय २॥ ॐ नयनय ॥ ॥ ॐ न  
 ययवृत्ताकर्णय २॥ ॐ मूर्धन ॥ ॥  
 ॐ नययवृत्तवन्धनाय २॥ ॐ यथ  
 मा ॥ ॥ ॐ नययसमावर्तनाय २॥  
 ॐ आकृष्ट ॥ ॥ ॐ नययविवाहाय  
 २॥ ॐ यय ॥ ॥ ॐ नययक्रमनया  
 जाय २॥ ॐ काष्ठा ॥ ॥

ननाग्नयानकावय ॥ मया ब्रूय  
 विद्यायै शक्तिरुक्तं कृतासनी कृष्टुक्तं  
 वाहनैवक्तुं यद्वर्तमानं वायुति ॥ स  
 पवर्तुवजिह्वा श्रुवाहिर्दक्षिकव  
 स्वाहापत्नीलितावाम आगच्छ ॥ कि  
 कर्माणि ॥ नयययानययनमश्ना ॥  
 नृणां दशसमिधहामश्ना ॐ समिधानि  
 न्यू ॥ ॥ यनश्वात्ससमिधहामश्ना ॥  
 याकमूलघृतघृतन ॥ ॐ रुद्रवाग्नि ॥  
 एकं ॐ स्वाहा ॥ एकं यत्नी निधाय ॥ ॥  
 जिह्वावीर्यकृष्णवृक्षास्यष्टा ॥ ॐ मनः  
 यजापतय २॥ स्वागशायातु रिस्व  
 नगतद्वयतथस्याग ॥ ॐ रुद्राहा ॥ ॐ  
 ॐ द्रु ॥ ॥ ॐ रुद्रवृत्ताहा ॥ ॐ ॐ

द्रुव ॥ ॥ ॐ रुद्रवृत्ताहा ॥ ॐ ॐ द्रुव  
 ॐ रुद्रवृत्ताहा ॥ ॐ द्रुववृत्ताहा  
 स्वाग ॥ ॥ ॐ ययमनकृष्णरुद्रव  
 धन ॥ ॐ शर्माधिवधू ॥ पूजनी ॥ ॐ न्य  
 स्यवक्षसि ॥ ॐ ॐ न्याय २॥ ॐ सुवाधि  
 यतय २॥ ॐ वज्रहस्ताय २॥ ॐ नेवाव  
 तासनाय २॥ ॥  
 ननायजायतिदवतामानसी विद्यस्वा  
 नतने ॥ ॐ वद ॥ ॥ ॐ यनीताय २॥  
 ॐ मय्यदाय २॥ ॐ यरुवदाय २॥ ॐ  
 सामवदाय २॥ ॐ नृथववदाय २॥ ॐ  
 ॐ न्याय २॥ ॐ नयय २॥ ॐ यमाय २॥  
 ॥ ॐ नेमयाय २॥ ॐ वनूपाय २॥ ॐ  
 वायव २॥ ॐ कुवलाय २॥ ॐ ॐ ॐ  
 नाय २॥ ॐ ननकाय २॥ ॐ वद ॥ ॥  
 ॥ ॥ यनश्वात्ससमिधहामश्ना ॥ ॐ निप  
 वाय २॥ ॐ वरुषेवाय २॥ ॐ दवाग  
 य २॥ ॐ दि ॥ ॥ ॐ विदि ॥ ॥ ॐ  
 स्वर्जाय २॥ ॐ मर्याय २॥ ॐ यातालाय  
 २॥ ॐ गोथे २॥ ॐ रुद्रायाय २॥ ॐ सूर्या  
 य २॥ ॐ वन्याय २॥ ॐ थागीधवाय २॥



दवे १

ॐ तिंसा २॥ ॐ आवथि सा २॥ ॐ सर्व  
सा २॥ ॐ दव सा २॥ ॐ निदव सा २॥  
॥ ॥ तता ॥ गनताम कवर्षी ॥ यथा दत  
सा ॥ डरुवे न मा दव सा २॥ स्नानयं तन  
॥ दक्रि ॥ पिह सा २॥ ॐ दक्रि ॥ पिह सा २॥  
मानसतिनमसाय ॥ डयस्यर्षनी ॥  
ॐ ॐ न ॐ न्यावी ॥ ॐ ॐ न्यावी ॥  
ॐ दमि न्याय साग २॥ ॥ तता ॥ वक्रु  
मसा ॥ साग सहितन ॥ कृणय लिधलध  
वक सदात ॥ जवसकाय खवसकाय  
॥ ॐ अग्नय साह ॥ ॐ दमग्नय ॥ दक्रि  
॥ ॐ सा माय साह ॥ ॐ दसा माय ॥ वा  
म ॥ ॐ अग्नी सा मा सा २॥ ॐ दमग्नी  
सा मा सा ॥ दथ सतया कृणयं थिका  
यावदय ॥ ॐ अग्नि जिह्वा सि ॥ ॐ ति  
वक्रु सा ॥  
तता वक्रु रिधा वर्षी ॥ ॐ दूँ वे कृण  
य साह ॥ पूर्व ॥ ॐ दूँ वे कृणय सा  
ह ॥ दक्रि ॥ ॐ दूँ वे कृणय साह  
॥ यन्त्रि म ॥ ॐ दूँ वे कृणय साह ॥

डरुवे ॥ ॐ कंटं पंवे नतयाय २॥  
मध्या ॥ ॐ दूँ वे कृणय साह ॥  
पूर्व ॥ दक्रि ॥ ॐ दूँ वे कृणय साह ॥  
पिलाय २॥ दक्रि ॥ नयन्त्रि मथा ॥  
ॐ दूँ वे कृणय साह ॥ यन्त्रि म  
नडरुवे ॥ ॐ दूँ वे कंटं पंवे नतयाय २॥  
तयाय २॥ डरुवे नतयाय ॥ ॥ मध्या  
वा ॥ दक्रि ॥ नयन्त्रि मथा ॥ ॐ दूँ वे  
कंटं पंवे कृणय साह ॥ कृणय साह  
हवे नतयाय २॥ ॥  
तता सफजिह्वा साह ॥ ॐ मुँ रिध  
य २॥ नेम ॥ ॐ मुँ कनकाय २॥  
यन्त्रि म ॥ ॐ मुँ वकाय २॥ वाय ॥  
ॐ मुँ कृणय २॥ अग्नी ॥ ॐ मुँ सय  
सा २॥ पूर्व ॥ ॐ मुँ अग्नि वकाय २॥  
ॐ ॥ न ॥ ॐ मुँ वक्रु न्याय २॥ मध्या  
ॐ मुँ रिध कनकाय २॥ नेम  
य यन्त्रि मथा ॥ ॐ मुँ वक्रु न्याय २॥  
काय २॥ यन्त्रि मथा ॥ ॐ मुँ वक्रु  
काय २॥ वायू अग्नि मथा २॥



न त्वेवादाहति ॥ ॐ अण्वदाय ॥ ॐ  
दं अण्वदाय ॥ ॐ पृथिवी ॥ ॐ दं पृथि  
वी ॥ ॐ अग्नये ॥ ॐ दं अग्नये ॥ ॐ व  
द्म ॥ ॐ दं वद्म ॥ ॐ युजाय न  
थ ॥ ॐ दं युजाय नथ ॥ ॐ दं वरुण  
स्वारा ॥ ॐ दं वरुण ॥ ॐ अषिस्व ॥ ॐ

ॐ दं म वि स ॥ ॐ नृ ना स ॥ स्वाहा ॥  
 ॐ दं नृ दा स ॥ ॐ धा य २ ॥ ॐ दं  
 दा ये ॥ ॐ भ मा ये २ ॥ ॐ दं भ मा ये ॥  
 ॐ सद स स्य त थ २ ॥ ॐ दं सद स्य त  
 थ ॥ ॐ अ नू म त थ २ ॥ ॐ दं अ नू म त थ  
 ॥ ॥ ॐ ऊ रू र्व दा य २ ॥ ॐ दं ऊ रू र्व  
 दा ये ॥ ॐ वा य व २ ॥ ॐ दं वा य व ॥  
 ॐ अ नू वि का य २ ॥ ॐ दं अ नू वि का  
 य ॥ वक्र ण्यादि ॥ ॥ ॐ सा म व दा  
 य २ ॥ ॐ दं सा म व दा य ॥ ॐ दि व २ ॥  
 ॐ दं दि व ॥ ॐ सू र्या य २ ॥ ॐ दं सू  
 र्या य ॥ वक्र ण्यादि ॥ ॥ ॐ अथ  
 र्व व दा य २ ॥ ॐ दं अथ र्व व दा य ॥  
 ॐ दि ग्म स्वा हा ॥ ॐ दं दि ग्म ॥ ॐ  
 च नु म स २ ॥ ॐ दं च नु म स ॥ ॐ व  
 क्र ण्यादि ॥ ॥ त ता प्रि व क्क रा म ॥  
 ॐ रु ४ स्वा हा ॥ ॐ दं रु ४ ॥ त्याग ॥ ॐ  
 रु व स्वा हा ॥ ॐ दं रु व ४ ॥ ॐ स्व ४ स्वा  
 हा ॥ ॐ दं स्व ४ ॥ ॐ रु रु व ४ स्व ४ स्वा  
 हा ॥ ॐ दं रु रु व ४ स्व ४ ॥



यं वदन् वृषाक्षमः ॥ ॐ त्वन्नाम्नः ॥  
ॐ दमनि वदन् नोऽस्मी ॥ ॐ सत्त्वन्ना  
म्नः ॥ ॐ दमनि वदन् नोऽस्मी ॥ ॐ न  
याऽप्याम्नः ॥ ॐ दमयाऽप्याम्नः ॥ ॐ  
अनन्तः ॥ ॐ देववृषाय सविशुवि  
श्वकर्मणे विष्णवे दक्षाय नमः ॥  
ॐ स्वर्गेश्वरा ॐ उदरुर्मव ॥ ॐ दे  
ववृषाय ॥ स्वागच्छ ॥ सर्ववृषाय  
निधाय ॥ ततो दृष्टा कृतिं दद्यात् ॥  
गणपतिं दुर्गादि दृष्टा कृतिं समर्क  
विय ॥ वासुदेवाय कृतिं विधाय ॥ दृष्टा कृ  
तिं पूज्याय ॥ वदुवान् ॥ ॐ सकल  
म्नः ॥

तत्तत्पूज्याय ॥ ॐ धर्मे ॥ ॐ यत्पूज  
युक्तं ॥ यत्तत्पूज्याय वा कृतं किल  
दृष्टं दक्षिणं ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ नृ  
थवा श्रीरुल ॥ सिन्दूरवद ॥ आवा  
दन ॥ दिव्यमकुट ॥ समिधद्वय ॥  
जयमाला ॥ ॥ आचार्यपूजनं ॥  
वन्दनादिहस्तार्थ ॥ ॥ दिव्यम  
कादि ॥ मृदिकादि वस्त्रवज्रनादि ॥

कंकनादिमूर्तकाल ॥ यजमाननय  
यता ह्ययवाक् ॥ सर्वलोकालसं  
कंकनं मृदिकास्तथा ॥ कुण्डलानिम  
कुटानि शुभ्रायति गृह्णन् ॥ सुक  
टमूलगायत्री नजय वयध्वान ॥  
मालासाधनं ॥ यं वगयनहाय ॥ वदु  
॥ संस्कार ॥ शिखर ॥ मातृकास्तुत ॥  
मूलमकुटाय नमिष्यथ कृपयथ कृ ॥ ग  
यत्री ॥ मूलपञ्चकपूजा ॥ ॥ विहि  
यागसाधन ॥ आर्यपात्रादकनहाय  
वदु ॥ संस्कार ॥ गायत्रीजप ॥  
यजमाननजय यकवाक् ॥ नमामि  
पावकं देवं पवित्रं सर्वकर्मसुखेश्वरं  
नमामहागजादवानां हृद्यदायकं ॥  
सर्वकर्मोपसाहितं आर्यशून्य  
कावर्कं ॥ अग्नियादिसनार्थय ॥  
लाक्षाह्लादकावर्कं ॥ सर्वपूज्यं वृनि  
त्यानि जह्नु कर्मसदानि व ॥ आचार्य  
यगुवर्तव नमस्तु ॥ निदायकं ॥  
दक्षिणामात्युवापि ॥ श्रीवक्षामन  
॥ निकर्क ॥ वनासनुवर्तुहला ॥ स



वृथा विविना सनं वा ऊऊष्माति  
 होमे वायुवृद्धि र्यवदने ॥ कृष्ण  
 वसदाहामा कृष्णलेकपुलपिथ  
 अर्कसह वतिव्याधि वन्दु ॥ यावां  
 कामिदं ॥ यदि वं अर्थवाहाया यामा  
 गवदुपूजकं ॥ समी समथतयायं  
 होराग्यमधदं ववि ॥ अथर्व वरुव  
 कामं पूर्व आयुर्विवर्द्धनं ॥ कृष्णदरु  
 वीवजीवावटं आयुर्क कामद ॥ आ  
 यूपिर्यवकल्याणं पूज्यो रुधनानि  
 व ॥ रुवतांगु वूयसादन सर्व काम ॥  
 प्रसिद्धय ॥ वद ॥ ॐ ॐ द ० रुवि ॥  
 आचार्यत्वज्ञाय ॥ अग्निवर्क यथा  
 वयत् ॥ वरुवर्क य ॥ कृष्णसमध  
 भरववावष्टयत् ॥ किलाद्रुतिर्क क  
 ल्याऊपमालांगृहात्वा ॥ रुसी ॥ कबी  
 मृगिवा मूडया किलाद्रुतिर्क रुद्रयात् ॥  
 विधिर्था अद्रुति विस्मरुय ॥ अद्रुवा  
 रुयाय विवातिन ॥ गुर्वमूखा मूक्षाय  
 न ॥ ॥ मलवाख्यं नया ॥ दशायातन  
 विय ॥ समस्त विथ ॥ कलषाप्रति

वा ॥ अद्रिद्यु कल ॥ लाजासह ॥ अवा  
 न ॥ सकर्बकलषाप्रतिष्ठा ॥ ॐ मनाद्रु  
 ति ॥ संख्याद्रुति ॥ लाकाथनाविय ॥ म  
 लाकालिथविय ॥ संख्याद्रुति पूर्व ॥  
 ॐ मूसंख्याता ॥  
 ततस्तदननकर्वयथानिमिक कर्मका  
 वयत् ॥ ततादवर्लसाय ॥ मूनद्राव  
 स ॥ विधिर्थायाय पुनिष्ठा रुकामतव ॥  
 युवतीदथनलं सलावदुर्तदुम मधु  
 पादहिनीषानकानमधुपा रुववाः  
 नानमधुयं कुर्यात् ॥ पातवासनवव  
 कीवायावदवदथुसत ॥ ॥ यतिरु  
 वावरुसा काटालषाद्रुत्कनतयाव  
 ववकायादथुसतय ॥ ॥ सुवर्णक  
 लषा ॥ रुगमालषा रुवसाथथ ॥ यिव  
 समूड कलषानढायक ॥ वरु ॥ क  
 लषायुजा ॥ न्यासादि ॥ अर्थयाग पू  
 जा ॥ ॐ नत्वा यामि ॥ आसनं ॥ ॐ द  
 वस्यत्वा ॥ अथर्व कर्ण ॥ ॥ पूर्व ॥ द्वा  
 दूनाग ॥ ॐ वरुवर्क नाग वाऊशा  
 नम ॥ ॐ कावसदो मय २ ॥ वद ॥



ॐ समुद्र अष्टांग लिलस्य मध्या पृष्ठा  
 नार्यं किं तमीयमाना ॥ ॐ न्यायावका  
 वृषक्षेत्रवाजकश्रुयादवो निरुमा रुच  
 नु ॥ ॥ दक्षिणा ॥ हाकूनाग ॥ ॐ कृष्ण  
 वर्णनागवाजक्षानमः ॥ ॐ दधिसमू  
 दाय ॥ वेद ॥ ॐ समुद्राय स्वावा ता  
 यस्वाहा सवित्राय स्वावा ता यस्वाहा  
 नावृष्याय स्वावा ता यस्वाहा यमिषु  
 ष्याय स्वावा ता यस्वाहा अश्वस्य स्वाय  
 स्वावा ता यस्वाहा मिमिदाय स्वावा ता य  
 स्वाहा ॥ ॥ यश्विमे ॥ नायूवनाग ॥  
 ॐ अथ तवर्णनागवाजक्षानमः ॥ ॐ  
 ॐ कृष्ण समुद्राय ॥ ॐ समुद्रादूर्ध्व ॥  
 उरुव ॥ ॐ यूनानाग ॥ ॐ पीतवर्णनाग  
 वाजक्षानमः ॥ ॐ गर्हादिक समुद्राय  
 ॥ वेद ॥ ॐ समुद्रो सीन रुत्वानां  
 दान ॥ ॐ मूर्मया रूवरिमावादि स्वा  
 हा मातृतासिमन्ता ॥ ॐ मूर्म  
 यारूवरिमावादि स्वाहा वसूवसि  
 द्रव स्वाधु मूर्मया रूवरिमावादि  
 स्वाहा ॥ ॥ मूर्हिका पूजा ॥ ॐ स्वा

नायुधिवि ॥ ॥ सर्वोषधी ॥ ॐ या ३  
 डावधी ॥ पूर्वजातादवब्रह्मि युगस्य  
 वा ॥ मने नूववृषा मह ० शर्तधामानि  
 सफव ॥ ॥ दवसक रुक्माजलिन  
 रुमायाय ॥ दवदवजगन्नाथ सृष्टि  
 संहारकावक ॥ निर्मिताय स्वाद  
 वत्त्वदायामूरवतसा ॥ न्यूनाङ्गस्त्व  
 धिकां गाया वा गायाधिकव ॥ कवि  
 त ॥ कुरुमर्हसि तत्सर्वं कृम्यताम्यव  
 मेधव ॥ सिलिदाघं प्रसाकय ॥ ॥  
 कतानुमन्तुनादि ॥ ॐ वक्राहर्न ॥  
 वलि ॥ ॐ अश्ववाव ॥ दीप ॥ ॐ न  
 आसि ॥ ॥ मताहा तालवा स्वय  
 नन स्वाय ॥ ॐ स्वस्तिनामिमी ॥ ॥  
 प्राहितनलिमिन स्वाय ॥ अर्घ्यपात्रां  
 दकनहाय ॥ सूक्ष्मय ॥ ॐ काष्ठात्का  
 ॥ काठनवृथ ॥ ॐ दीर्घाय स्वाय ॥  
 दवस्त्रानं ॥ मूर्हिका वाक्कास्यं रुमा  
 ॥ लखनहाय कयजमानन रुमा ॥  
 ॐ रुक्माजामि ॥ किलादकने ॥ ॥  
 गजदक मूर्हिका ॥ ॐ त्वमग्नेय ॥



वाल्मीकमूर्तिका॥ ॐ श्रुथादवामधू  
 मतीवगृह्णन्तूक्तवतिवाजस्यस्थिता  
 नाश्याहिरिभिर्भुववृणाववृणविवन्धा  
 हिरिन्दुमनयन्नक्षत्राती॥ ॥ यामा  
 वाव॥ ॐ श्रुवरुतनिर्वृ॥ ॥ ॐ वाज  
 क्रमधवा॥ वा॥ उद्वावमूर्तिका॥ ॥  
 यव्वतायमूर्तिका॥ ॐ दवीवापोश्रु  
 ययूवा॥ ॥ गण्डमूर्तिका॥ ॐ  
 श्रुयंणोयस्त्रि॥ ॥ समिधमूल॥ ॐ  
 ववृणस्यातम्॥ ॥ गंगामूर्तिका॥ ॐ  
 श्रुवकार्क॥ ॥ कू॥ दक॥ ॐ व  
 द्वास्यात॥ ॥ वलोदक॥ ॐ वद्व  
 वधत्सूवायाणा॥ स्वर्नरुयात्तृष  
 वमिथूनसङ्गमात्॥ गुवाद्वादिग  
 मनाश्चैतत्यावमानिविवहं पूनामि  
 ॥ ॥ यव्वादक॥ ॐ रुविष्मतीविमां  
 श्रुथादुविष्मां॥ श्रुविवासति॥ रु  
 विष्मान्दवा॥ श्रुद्ववा॥ रुविष्मां॥ श्रुमु  
 सूर्य॥ ॥ रुलोदक॥ ॐ यारुलि  
 नी॥ ॥ रुलोदक॥ ॐ दीपोयूत्वा॥

[illegible]



चक्रद्वैतवर्णकलशं च यमिरात्र  
थ॥ अदिनदृष्टिवियके॥ यतननचक्र  
कुंजदयक॥ ॥ सिंधुव॥ कुंजवि॥  
समुद्रा॥ कुंजद्विका॥ ॥ रुद्रपूषा॥ कुं  
या॥ रुद्रलिनि॥ ॥ अग्नीर्वायुदवानूक  
भन॥ दवस्वरूपन॥ ॥ सरु॥ कुं या  
रुद्रलिनी॥ अग्नी॥ कुंज॥ सि॥ पुनिष्ठा॥  
कुंमनाकृति॥ ॥ क्रसकनकन॥ कुंयू  
र्लवन्तु॥ ॥ दवविसर्जनी॥ कुंजद्वयक  
म॥ ॥ दवडल्लनी॥ कुंजद्विकृति॥  
सामरुपिलिस्त्रियमयय॥ साममिन्तु  
यवसर्ग॥ ॥ दवद्यापालिनयजमान  
ज्ञाय॥ ॥ व्यापालिर्दक्षिणा॥ विय॥  
दवज्ञा॥ मधुयंजाम्बा॥ वाक्म॥ एनस्वरु  
वाचनेय॥ ॥ नेमस्यदावयवता  
द्वयनलाकायचारी॥ मधुयंयवस्यद  
वली॥ ॥ वर्द्धनाकलसनदक्षिणा॥ थ  
पुलनडरुनसदवत॥ रुद्रयीरिका  
स्त्रयनी॥ कुंनम॥ रु॥ ॥ विष्णुव॥ कुं  
वृंदविष्णु॥ ॥ अग्रयणार्थास्त्रयनी॥ ॥  
गृहायस्कनधादि॥ वेद॥ कुंका॥ पुला

पुला॥ ॥ निडाकनसस्त्राय॥ कुंवायवो  
वोय॥ ॥ वसुजास्त्राय॥ ॥ कृष्णद्वयन  
॥ ॥ अद्वय॥ पादनशिवा॥ सिवनपादता  
॥ न्यासयायदवयादान॥ ॥ पाद॥ पाद॥  
कुंरु॥ रुद्रा॥ कुंजो॥ अस्तनत्वायवक्त्रा  
नम॥ वेद॥ कुंवक्त्रयज्ञानी॥ ॥ ददय  
कुंरुव॥ रुद्रा॥ कुंजो॥ विद्यातत्वायवि  
ष्णुव॥ ॥ वेद॥ कुंविष्णुव॥ वाट॥ ॥  
सिन्धुसि॥ कुंस्व॥ रुद्रा॥ कुंजो॥ विद्यातत्वा  
यसदागिवाय॥ ॥ वेद॥ कुंनम॥ रु॥ रु  
वाय॥ ॥ यून॥ विवनपादता॥ काट॥ रु  
नादीसंधानयैवस्त्रकानशयावक्त्रा  
दास्ययज्ञसिंहासनसद्वदत॥ ॥  
यज्ञसिंहासनेस्त्रिवाग्नाकृति॥ कुंजो॥ अ  
स्तनत्वायवक्त्रा॥ रुद्रा॥ कुंवक्त्रयज्ञा  
नी॥ यदसधिय॥ ॥ कुंजो॥ विद्यातत्वाय  
विष्णुव॥ रुद्रा॥ कुंविष्णुव॥ वाट॥ ददयस  
धिय॥ ॥ कुंजो॥ विद्यातत्वायसदागिवा  
यस्त्रा॥ कुंनम॥ रु॥ रुवाय॥ सिन्धुसि  
धिय॥ ॥ यून॥ धमकुनी॥ वदनी॥ सिन्धु  
गवयावपादनधूनक॥ काथिस्यंष्टुवान॥







ताय स्वाहा नमः ॥ यथा यतय स्वाहा वि  
 ऋषि स्वाहा तायादि हो स्वाहा दि हो मध  
 स्वाहा दि हो समृती काये स्वाहा सन स्वा  
 हो स्वाहा सन स्वा हो पाव काये स्वाहा स  
 न स्वा हो वरु हो स्वाहा पूरु स्वाहा पूरु  
 यय स्वाहा यय स्वाहा पूरु न रं धिया य स्वा  
 हा लक्ष स्वाहा लक्ष रु बी पाय स्वाहा ल  
 क्ष पूरु यय स्वाहा विष्णु स्वाहा वि  
 ष्णु निरु यय स्वाहा विष्णु विधि  
 विष्णु य स्वाहा ॥ यथा दव स्य नाम कल  
 नी ॥ ॐ ॐ रु न या सना य स्वाहा ॥  
 वद ॥ ॐ या ॥ रु लिनी ॥ स प टि नि न ला  
 दाव ॥ रु ल या सनी ॥ ॐ रु र्गा मून  
 या सना य स्वाहा ॥ ॐ मून यत ॥ व न  
 ण ला दाव मून या सनी ॥ यं व या समूदा  
 ॥ ॐ द व ॥ वू का क न ना य स्वाहा ॥ व  
 द ॥ ॐ मूर्द्धा न दि वो ॥ लू खान डा हा खा  
 ल ॥ ॐ स धी क र्ण व ध ना य स्वाहा ॥  
 ॐ रु दं क र्ण रि ॥ ॥ लू डा हा मूल ॥ ॥  
 ॐ गा ना य मि नु ॥ वा क रु णी नि न ॥ ॥  
 ॐ म हि व र व न्ध ना य स्वाहा ॥ व द ॥ ॐ

पुन रु पुन रु पुन रु पुन रु ता नि रु द्वा मि र्य  
 रु व न स्य मि र्य रु य ॥ दे वा मि र्य म  
 ना म रु स मृ ती का म हि रु य व र्ध णी य  
 रु वा रु स ० मृ ती र्थ ना म रु स द्वा ॥ य  
 द वा म ना जा ना म ना य या द रु क्त व  
 रु ना व नु र न श या नु र रु ॥ स्वा हा ॥ ॥  
 य ला ण द रु मूं ज ॥ गाय त्री म रु ण य रु  
 य वी त वि य ॥ य था द व स्य गाय त्री पु  
 दान ॥ ॐ वि ष्व रू पा य वि ष्व रु वि ष्व  
 स न धी म ही त नो वि ष्व पु वा द या त् ॥  
 ॐ धि था स मा व र्क ना य स्वाहा ॥ ॐ मू  
 क रु न ॥ मूं ज द रु का का य ॥ ॐ या  
 न ॥ दी का पु द ना य स्वाहा ॥ ॐ व र न दी  
 का ॥ ॐ पु वा वि वा हा य स्वाहा ॥ व  
 द ॥ ॐ गी व र्क य जा म ॥ मू म का य मू म  
 क द वी नु स्य म र्द स प द द ॥ ॐ का  
 दा त् ॥ रु लि नि रु य ॥ ॐ गा ना य मि ॥ ॥  
 न व न्ध का न का खा य क ॥ मू लि न न ला  
 य ॥ ॐ स रु मा नि ॥ ॐ न म ॥ म रु वा य ॥  
 ण ला व वि य ॥ ॐ पु जा य त ॥ रु सा न ग  
 य क ॥ ॐ न व वा य ॥ वं दा व न रु व र्क ॥







[illegible]

॥ द व ष ष ष ष ष ष ॥ आ कृ ति वि स्यं  
 मू ण ष ष ॥ ऊं ऊं द द या य स्वा हा ॥ ऊं  
 य द्वा य न ॥ द द या ॥ ऊं ऊं णि व णि स्वा  
 हा ॥ ऊं स रु म णी र्वा ॥ णि व ॥ ऊं ऊं णि  
 स्वा ये व ष ट् ॥ ऊं मू ष्म सं रु ॥ णि स्वा ॥ ऊं  
 ऊं क व वा य दू ॥ ऊं मू ष्म ४ णि ॥ क व  
 व ॥ ऊं ऊं न न या य व ष ट् ॥ ऊं वि ण  
 त् ॥ न न ॥ ऊं ऊं ४ मू ष्म य रु ट् ॥ ऊं न म रु  
 नू ॥ मू ष्म ॥ ॐ ति व द ष षं ग न्या स ॥ ॥  
 ध जा द न सा ध ना ॥ ॥ ध न पू जा ॥ ऊं य वि  
 ष ॥ य ष ग व न ॥ ऊं त स्म त य ॥ मू र्धा  
 द क न ॥ ऊं त्व म ण्म य र्हि ॥ णि त त्व न ॥  
 ऊं मू ष्म ॥ लाम विला म न य न  
 वा कृ ति व द न स रु त्वा य ॥ ध जा पू ज न ॥  
 मू ष्म न ॥ ऊं त त्वा जा मि ॥ ऊं द व स्य त्वा ॥  
 ऊं मू ष्म ॥ ऊं मू ष्म ॥ क मि न्द्र ॥ मू ष्म  
 रु ना दि ॥ धू य दी प रु ल ने व य ॥ य  
 ति ष ॥ ऊं म नो कृ ति ॥ मू कृ ति वि स्यं  
 त्वा य ॥ ऊं मू ष्म ॥ क मि न्द्र ॥ ॥ यं वा रि  
 ष क पू जा ॥ ऊं या रु लि ॥ रु ल ॥ ऊं न ह्य  
 ॥ यू ष्य ॥ ऊं म नो कृ ति ॥ ला जा ॥ ऊं रु का



नामिन्दुस्यतिष्ठन्नुवाचयमा ॥  
वृषरुमुवाच ॥ द्यूतयुष्मानसाभा  
दमानास्वाहादवाऽश्रुमृतासादयन्ता  
म् ॥ म॥ ॥ ॐ शिवा नामा ॥ मृकृत् ॥ ॥  
गङ्गाविदत्तसाधना ॥ धर्म ॥ कृष्णकाय  
व ॥ ॐ कौधर्मादि ॥ ध्यायस्वाहा ॥ ॐ  
वन्द्यमाऽश्रुमृकृत्वास्य ॥ ध्यावतदिवि  
॥ त्रयि स्थिता ॥ मृकृत्वास्य ॥ ॐ वि  
प्रतिकनिकृदन् ॥ वन्द्यमपुल ॥ ॥ ॐ  
कौशल्यादिस्थाजानकालाय ॥ ॐ  
नववायुवृ ॥ ध्या ॥ काल ॥ ॥ ॐ कौवा  
यूमपुलायवदुष्टयश्चसगत्वाय ॥  
ॐ नञासि ॥ मृकृत्वास्य ॥ ॥ ॐ कौ  
मृकाणामपुलमृकृत्वास्य ॥  
ॐ नमः ॥ कलणरुगस ॥ ॥ ॐ कौ  
यवमृकृत्वास्य ॥ वदुष्टयश्चसगत्वाय  
॥ ॐ सर्वत्रकृत्वास्य ॥ नानादनादक  
निलीजनस्य ॥ वदुष्टयश्चसगत्वाय ॥ ॐ  
वृन्दुतयतिष्ठानसविता ॥ ॐ कौ  
वाजस्यसनितायदक्षिणार्धाय ॥ ॐ  
क्यामह ॥ यवायदुवि ॥ ॥

वापालियारुस्यतनस्रक्तवा  
यावर्तखनहायचन्दनादिदक्षिण ॥  
मुक्ति ॥ विश्वकर्मानमसुखी ॥ लाकृष्टि  
कावर्क ॥ यथायुधकवास्य ॥ विश्वक  
र्मनमासुत ॥ मृकृत्वास्य ॥ मृकृत्वास्य ॥  
वदुष्टय ॥ ॥ ॐ दवथायवयवसाय  
जायादनयन ॥ विसर्जनयादाव ॥ ॥  
नवकाथासवत्तवीहि ॥ मृकृत्वास्य ॥  
हृक्काथा ॥ सगत्वास्य ॥ नानासयाय ॥ ॥  
वृन्दुतयतिष्ठानसविता ॥ ध्यावतदिवि  
यामूलमकुण्डयवयवसाय ॥ ॐ कौ  
वृन्दुमृकृत्वास्य ॥ वदुष्टयश्चसगत्वाय ॥ ॐ  
सगत्वा ॥ त्वायविसर्जनयाय ॥ ॥  
थायवयवमृकृत्वास्य ॥ थायसैवतनस्र  
वदुष्टय ॥ ॥ मूलमकुण्डयवयवसाय  
वदुष्टय ॥ मृकृत्वास्य ॥ ॥ कृष्णक  
गत्वा ॥ यस्यादवस्य ॥ मूलमकुण्डयवयवसाय  
दत्वा ॥ मृकृत्वास्य ॥ ॐ ॐ दविष्णु ॥ व  
दुवानत्वाय ॥ ॐ मनाद्वि ॥ यतिष्ठा ॥  
ध्यावत ॥ ॥ गङ्गाविद्वत्तयसा ॥ मृकृत्वा  
स्य ॥ मृकृत्वास्य ॥ मृकृत्वास्य ॥



धनयविधिर्धनं रुतुष्ट्यादिनामयति  
छांकावयेत् ॥ दणकर्मयाय दवय  
नदवार्धनक्षत्रार्क ॥ आद्रुतिविस्म  
य ॥ वाहिसमावक्रयाय ॥ कर्म ॥ धन  
द्रुतुक्रया ॥

सक्तिक्रुद्रविधिर्धनं संख्याद्रुतिर्नामधन  
क ॥ सलायापूजा ॥ आद्रुतिविस्म  
धनलिगद्रुलिधजावृण्यं वाहिसक  
यागयादावदवलदायक ३ ॥ दवया  
द्रुवनयजमाननगरुतिथियकं वाक्  
यावक ॥ हामलकूडालेखकायावग  
रुतिथियकं दवयाक वने ॥ ॥ एत  
र्कमुद्यटितसूत्रपूर्वलिफसद्रुतकल  
दाने ॥ दातव्य ॥ यजमानन ॥ ददस्यपू  
न ॥ कूडालिलजलकलणयजमानन  
जानकं वाक् ॥ वावाहकस्ययादि ॥ अ  
यादि ॥ रुतुगवसर्वरुतवृषासाधाय  
विनिर्मितं ॥ नक्षत्रार्कसमावायसूत्रपूर्व  
कलणधर्क ॥ यजमाननद्रुयन ॥ द्रा  
यूतनयनसाभटोकयामिसहाविष्वा  
गृध्रर्कामधूसूदन ॥ वाहिसानिजया

वाजासुहृत् ॥ सूयजासुथा ॥ रुमलकृप  
दाननपूर्वकातिगुणधर्क ॥ यावकृतप  
नसूत्रार्कधर्कवृववर्णिनी ॥ तावयुगल  
हसानिविष्मलकमहियत ॥ यावच्चतु  
दिवाकव ॥ पुरुतयाव्यामाइलानिहसा  
यावत्तनूदिमाव ॥ पुरुतयस्त्रिषुवृ  
थातन ॥ केलाणगिविजायति ॥ सूत्रमन  
यावत्तदीसागवाहर्कसकवर्णधर्कनि  
नूयमवताकावच्चिर्वेतिष्ठतु ॥ ॥  
शीशीशीमूकुरुद्रावकयागयगुस्य  
महसम्यदद ॥ गरुविजदवधियकं थ  
तायनधर्क ॥ यं वाहिसक ॥ ॥ व्यापलि  
नमालका ॥ आंदावथादावन ॥ रुगिलि  
स्वने ॥ रुतुआधवणकस्यादि ॥ ॥ रुतु  
कां ॥ रुतुवाह्याधियतयवृद्ध ॥ ॥ ॥  
धनवकाथास्वने ॥ धातुआदिनमाल  
कात ॥ विधिर्धनयागसानिर्वजनयनूष  
न ॥ निर्वजनयनूषाया ॥ ययूयातनका  
यथ ॥ ॥ पून ॥ रुतिवाद्रुतिविय ॥ मूलम  
कुण्डलार्कवा ॥ नायकायधुवानयूर्ध्व ॥







यनामाधूसूदनः॥ इतं महाधनः॥  
 कृत्वा वापं वरं गिरिं किं किं नीयत सी  
 त्नां मयूखकुण्डलविर्णः॥ एतं नेव विम  
 नन सर्वदवापविस्तिर्णः॥ सीवत्सनस  
 रुषेकी भादतदिविनाजवत्॥ ध्वजामा  
 लाकुलकुर्यात्थथायासादमानतशय  
 थाध्वजासूकीवापिदिशिदिक्कनिवधाय  
 त्॥ यद्वादिवक्त्रुनुनाम्यविसंख्यागुवि  
 यतं॥ तावयूगसहस्रानिविष्मलाकम  
 हायत॥ ॥ धीधीधीभूमूकरुहोवका  
 यध्वजादानं गुरुं मरुं सीयदद॥ दवधि  
 यक॥ ॐ कादात्॥ पिताकायावदवल  
 स्वराकवधायकं दवशकामथियकं  
 दवमथियकं तय॥ पंचसूक्तानगच्छ  
 विसृज्य आढावभूदति॥ मूलमनु  
 षाब्रुहिवि॥ गरुवियातां ध्वजायातां भू  
 दतिविस्मिताय॥ ॥ ॐ भूभिद्युक्त॥  
 गरुव॥ दव॥ ॐ ॐ दविष्म॥ ॐ धीध्वज  
 ॥ ॐ भूस्माकमिन्दु॥ ध्वजा॥ पूनवादति॥  
 तायकाय॥ ॐ मनादति॥ यति॥ स्व  
 तासीत्याय॥ पंचसूक्तकाकाकाय॥ ॥

[illegible]



यान॥ ॥ कुरु॥ कुरु॥ कुरु॥ ॥  
 जना॥ बालयात॥ कुरु॥ मृग॥ ॥  
 धव॥ दवता॥ मालकविय॥ दव  
 यामूलमनुनविय॥ १०८॥ ॥  
 अननकवतायापनरुवसावि॥ षष्ठ  
 सिधहास॥ वलसि॥ कुरु॥ मृग॥ मेय२  
 ॥ दव॥ कुरु॥ मृग॥ नूवसि॥ विष्णु॥ वेत्ता॥ सा  
 मस्यतनूवसि॥ विष्णु॥ वेत्ता॥ ति॥ धवा॥ ति॥ स्थ  
 मसि॥ विष्णु॥ वेत्ता॥ धना॥ यत्ता॥ साम॥ रुत॥ वि  
 ष्णु॥ वेत्ता॥ मय॥ ता॥ वा॥ य॥ स्था॥ ष॥ द॥ वि॥ ष्णु॥ ता  
 ॥ १॥ द॥ वलसि॥ कुरु॥ कपिला॥ य२॥ कुरु॥ नी  
 लगी॥ वा॥ ष॥ ति॥ क॥ मृ॥ दि॥ व॥ ०॥ नू॥ डा॥ २॥ द॥ य  
 ति॥ ता॥ ष॥ त॥ वा॥ ५॥ स॥ रु॥ म॥ या॥ जन॥ ध॥ न्वा॥ नि  
 त॥ म॥ सि॥ ॥ १॥ व॥ वा॥ ग॥ त॥ सि॥ कुरु॥ ष॥ ष॥ या॥ य  
 २॥ कुरु॥ ड॥ द॥ ल॥ जा॥ त॥ ३॥ य॥ ला॥ ख॥ सि॥ कुरु॥  
 ष॥ क॥ र्ष॥ ष॥ या॥ य२॥ कुरु॥ वि॥ मृ॥ ट॥ ५॥ कुरु॥  
 ॥ कुरु॥ रु॥ वा॥ य॥ ध॥ म॥ य२॥ कुरु॥ ग॥ म॥ र्क॥ ५॥ ॥  
 वे॥ क॥ क॥ न॥ कुरु॥ म॥ लि॥ रू॥ ष॥ ष॥ या॥ य२॥ कुरु॥ दि  
 वा॥ वा॥ वि॥ ष्णु॥ २॥ द॥ न॥ वा॥ य॥ धि॥ वा॥ म॥ हा॥ वा॥ वि  
 ष्णु॥ २॥ द॥ न॥ वा॥ य॥ धि॥ वा॥ म॥ हा॥ वा॥ वि  
 व॥ स॥ ना॥ प॥ ष॥ ष॥ या॥ य२॥ कुरु॥ दि॥ ष॥ ष॥ या॥ त॥ स॥

आविष्णु॥ वेत्ता॥ ५॥ द॥ व॥ दा॥ न॥ सि॥ कुरु॥ ग॥ ल  
 या॥ न॥ य२॥ कुरु॥ नी॥ य॥ दा॥ ॥ ॥ ला॥ हा॥ सि॥  
 कुरु॥ व॥ ल॥ रु॥ दा॥ य२॥ कुरु॥ य॥ न॥ दि॥ ष्णु॥ रु॥ व॥ त  
 वा॥ र्थ॥ ष॥ मृ॥ ग॥ न॥ रू॥ म॥ ४॥ कुरु॥ वा॥ गि॥ वि॥ ष्णु  
 ष॥ य॥ स्था॥ नू॥ व॥ षि॥ षि॥ वि॥ कु॥ म॥ ष॥ षि॥ षि॥ क्रि॥ य॥ नि  
 रु॥ व॥ ना॥ नि॥ वि॥ ष्णु॥ ॥ ५॥ मृ॥ य॥ मा॥ र्ग॥ कुरु॥ ५॥  
 न्या॥ धा॥ वा॥ य२॥ कुरु॥ न॥ द॥ वा॥ यि॥ २॥ ख॥ य॥ न  
 सि॥ कुरु॥ ला॥ क॥ ना॥ था॥ य२॥ कुरु॥ आ॥ कुरु॥ ॥ १०॥  
 वे॥ क॥ क॥ न॥ कुरु॥ रु॥ पि॥ न्दा॥ य२॥ कुरु॥ वि॥ ष्णु  
 क॥ म॥ ॥ ११॥ वा॥ सि॥ ख॥ नि॥ कुरु॥ स॥ रु॥ म॥ रु॥ ष॥  
 य२॥ कुरु॥ स॥ रु॥ म॥ ष॥ ॥ १२॥ मृ॥ क॥ या॥ त॥ कुरु॥  
 कुरु॥ य२॥ कुरु॥ स॥ रु॥ म॥ स॥ य॥ मा॥ १३॥ दू॥ र्वा  
 वलसि॥ कुरु॥ या॥ ग॥ नि॥ दा॥ य२॥ कुरु॥ पू॥ व॥ ष॥ न  
 ॥ १४॥ ध॥ त॥ अन॥ न॥ कुरु॥ वा॥ या॥ प॥ न॥ या॥ वि॥ ष  
 ष॥ ॥ ॥ ति॥ व॥ नू॥ हा॥ म॥ ॥  
 वृ॥ ता॥ या॥ प॥ न॥ रु॥ व॥ सा॥ ॥ य॥ ज॥ मा॥ न॥ न॥ य॥ धा  
 द॥ व॥ स॥ व॥ ता॥ र्ज॥ न॥ ॥ ॥ व॥ ति॥ य॥ व॥ ग॥ वा  
 विय॥ सूर्यो॥ र्वा॥ दि॥ ॥ पू॥ र्ज॥ न॥ ॥ धा॥ ना॥ दि॥  
 धू॥ या॥ दि॥ मृ॥ र्वा॥ ॥ वा॥ र्सी॥ त॥ का॥ क॥ ल॥ स॥ पू॥ र्जा  
 या॥ य॥ मा॥ ल॥ ॥ जा॥ य॥ ॥ स॥ रु॥ ॥ वा॥ र्वा॥ न॥ ॥  
 अन॥ न॥ कुरु॥ वा॥ या॥ प॥ न॥ रु॥ व॥ सा॥ ॥ व॥ ज॥ न॥



सर्वलक्षणकनिधनवाक् ॥ ॐ नमो  
यथादि ॥ ॐ पूज्यं वद ॥ वदत ता  
यापनमावत ॥ विधिनापी नूनकस्य  
वतनिष्ठापनाय ॥ ॐ दैववज्रं स्व  
लक्षणकं ॥ ॐ यिन ॥ रुक्मनिवदि  
तन्वददहिशागापवर्गकं ॥ वरं विद  
मयावारं नूनानिव वद ॥ ॐ यमिपू  
मिदं ननु यसादववद ॥ ॥ ॐ तसू  
वर्जवज्रनिर्मित नूनकालकं नि ॥ ॐ  
षवतजनिगरुल्लवाफिकाम ॥ रुगवत  
पी नूनकाय ॥ ॐ तालकं समर्थयामि ॥  
मधुलमदासी ॥ ॐ वसूकाजानकं त  
समस्तुतिरिहि ॥ यजानयानं नूदति ॥  
ॐ ॥ वद ॥ ॐ वरं कृपुन ॥ त्वायवदुवा  
न ॥ यूनवाद्रुति ॥ ॐ मनाद्रुति ॥ युतिष्ठा  
॥ ॥ मधुलविसर्जनी ॥ नासिय ॥ मधुल  
गयादखाननकूथ ॥ नूवार्यनधसव  
लिवियक ॥ नूद्रुति ॥ ॐ नू सखाता ॥  
त्वाय ॥ दवकल ॥ दिवाद्रुपूजा ॥ ॐ  
निकाद्रुति ॥ ॐ ओ ॥ नि ॥ ॥ यूरिका  
द्रुति ॥ ॐ ववकज ॥ ॥ यवधान्यादि

विहाहाम ॥ यव ॥ धान्या ॥ लाजा ॥ समि  
धा ॥ गुठादन ॥ पीरुल ॥ दध्नादन ॥ व  
दवीरुल ॥ पियेयु ॥ समुखा ॥ धानयूषा ॥  
ॐ ततिल ॥ कृष्णतिल ॥ वकतिव ॥ ति  
क ॥ ॐ तिल ॥ नूयकं धाल ॥ यमकं  
॥ चन्दुलि ॥ गुग्गुलि ॥ सर्वविधा ॥ कपु ॥  
मूल ॥ रुल ॥ यकान ॥ ॐ ॥ दूर्वाकत  
॥ ययसाक्षरुव ॥ तत रुद्रयात ॥ ॥  
वामन नूनसंकल्प ॥ दिगात्रे ॥ धवा  
नूकमन ॥ वलिपूजा ॥ ॐ यूनवादान ॥  
वद ॥ यूनदीयवृत्तिका ॥ गायत्रीजयत  
॥ ॐ ओ ॥ नि ॥ यूननाक्षरुव ॥ तत रु  
द्रयात ॥ वामननमवेवावे ॥ ॥ य  
ववानुदाम ॥ ॐ तन्नाग्न ॥ ॐ स  
त्तन्नाग्न ॥ ॐ नूयाध्याग्न ॥ ॐ यत  
ततव ॥ ॐ उदरुम ॥ ॥ ॐ पाहिनाग्न  
यत्वाहा ॥ ॐ पाहिनावि ॥ ॐ दवस ॥ ॥  
ॐ सर्वपाहिर्वि ॥ ॐ दवस ॥ ॥ ॐ यरु  
पाहिविहावस ॥ ॐ सर्वविहावस  
माहा ॥ ॐ नून ॥ तिलिकं रुद्रामिहाहा  
॥ ॐ नूतिविकं रुद्रामिहाहा ॥ ॐ नूना  
रुद्रातमना रुद्राय सर्वकियतमम ॥



ॐ सर्वदग्रथ कल्पतं सो वा ह्यनं यद्रु  
 तासन स्वाहा ॥ गायत्री ॥ ॐ वेदं न वा  
 यवि त्महं नूनं काश्चिन्नायधीमहि तन्ना  
 वक्रिष्य वा दयात् ॥ ॐ दव कृतस्येन  
 सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ मनूष्य कृत  
 स्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ पितृ कृत  
 स्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ आत्मा  
 कृतस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ से  
 नस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ य  
 द्वाहमना विद्वाथ कावय द्वाहमना वि  
 द्वाहस्य सर्वस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥  
 ॐ स्वस्ति न ॐ न्यु ॥ ॐ यय पृथिव्या ॥ ॐ  
 विष्णवे ॥ ॐ अग्नि देव ॥ ॐ ओ ॥ ॐ नि ॥  
 वाक्कादक्रिषा दाने ॥ वाचने ॥ वाचनाद  
 कणिवशा क्रिष्या एनिधाय ॥ ॥ वलि  
 ह्नमी ॥ दस वलिविसर्जने ॥ दश वलि  
 श्रया ॥ ॥ संघवयासने ॥ ॐ कामं काम  
 धूय ॥ यवि कुभाचने ॥ ॐ समिप्रियाना ॥  
 तता ॥ विवासन दिन पूर्य ॥ दिन पूर्य  
 सध्वान रुको धव कन मूमात्र ॥ वाक्का ॥  
 अमूको धसू अविवासन दिन पूर्य क्रि  
 समूकूक मसु ॥ ॐ दवा गा ॥ ॐ ॥

ॐ न्यायय ॥ ॐ हिमस्यत्वा ॥ ॥ मधु  
 लीकावयत् ॥ ॐ सीद्धा नूनं कुमन पठ  
 थ ॥ ॐ नूनं कुमन दवा आणीर्वा द ॥ ॐ आत्मा  
 णीर्वा द ॥ ॐ यय कूर्मा ॥ यजमान ॥ व  
 द्वाविसर्जन सकरुका गान कायम  
 तव ॥ ॐ उह्रिष्ठ वक्र ॥ ॐ संवर्हि  
 र्वता ॥ कृष्ण नैपदाय ॥ ॐ न नूपा अण  
 ॥ लाहान पान ॥ ॐ आ यय यम ॥ कृष्ण  
 नय कूठ स्या दावथ मतय ॥ वाचमा  
 दकना हिष कयजमान ॥ वन्दना दि  
 आणीर्वा द ॥ ॐ यवि वासन विधि ॥ ॥  
 सक्रिया तय वाक्कादिष्टारुल ॥ नात्रि  
 कलत्र कय दृष्टत यूप्ये यानुसतान ॥ स  
 क्रिया तय रू स्वाद ता ॥ ॥ न्यास ॥  
 पुन ॥ सीखा द्रुति ॥ अर्चुया दियूष्य दद  
 न् ॥ ॐ अग्न्यदाय अग्नि गायसा मद  
 वता यय गी बुन्द सयूष्य नमशा ॥ पुर्व  
 कुमन ॥ य त्वेद सामवेद अथर्वेद  
 द ॥ ॥ तत ॥ यज्जा दति दवता मान सी  
 चिन्ना ॥ ॐ वक्र ॥ १ ॥ ॐ पुलिताय ॥  
 ॐ अग्न्यदादि ॥ ॐ न्युयत्वादि ॥ १ ॥  
 पुनर्लोभेषु दवा चने ॥ ॐ जि यश्च य ॥







[illegible]

तुं नदवानिस्तदा॥ अकं तुं दाहा॥ अकं  
 पुनितनिक्षय॥ ॥ घृताद्रुति॥ तुं रु  
 स्वाहा॥ तुं रुवः स्वाहा॥ तुं स्वः स्वाहा॥  
 तुं रुकुवः स्वाहा॥ ॥ यैववावू  
 दाम॥ तुं लभेन्नोम्र॥ तुं सत्त्वनाम्॥  
 तुं श्रयाऽग्ने॥ तुं धर्मार्त॥ तुं उद्  
 र्गमी॥ ॥ गणपत्यादिमालकाघृता  
 क्रुतिविय॥ घृताक्रुतिपूर्व॥ तुं संफ  
 र्तश्रुत्वा॥ ॥ मालकात्रिाक्रुतिविय॥  
 कलषायतिष्ठ॥ संस्वाक्रुति॥ तुं श्रु  
 संज्ञाता॥ ॥ यथाकर्मा॥ ॥ देवप्र  
 तिष्ठाश्वसाधनादेवार्च्यकार्णाकार्ण॥  
 आक्रुतिविर्ष्याय॥ वेद॥ यथादेव  
 स्म॥ गरुडिकुरुश्वसालापायूजा  
 याय॥ धर्मे लिङ्गहूतिविसर्जनयादा  
 वक्ष्या॥ क्षिरहात्र॥ ॥ वताग्रायन  
 श्वसायथादेवस्यवतार्चनेद्धथुकु  
 द्रुयार्थं नर्घरुकापायमूमात्र॥ ॥  
 पूर्ववत्सन्निधौमविष्टक॥ व्याख्यान॥  
 मधुलमदासीयेवस्यकादनकेत॥  
 युक्तिलोकयुक्तिजआक्रुति॥ ५४॥ तुं दी  
 यत्वाय॥ त्वाय॥ तुं मनाक्रुति॥ युक्ति